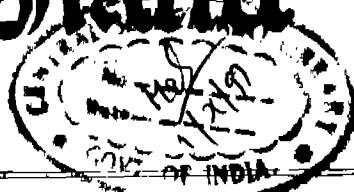




भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



प. 28]

नई दिल्ली, मानिवार, जुलाई 12, 1997/आषाढ़ 21, 1919

No. 28]

NEW DELHI, SATURDAY, JULY 12, 1997/ASADHA 21, 1919

इस भाग में विश्व पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (1)
PART II—Section 3—Sub-section (1)

भारत सरकार के संतालियों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय विधिकारियों (संघ राज्य
सेवा प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा विधि के महत्वपूर्ण बनाए जाए जारी किये गये साधारण लाइब्रेरीक
नियम (जिनमें साधारण प्रकार के भावेष, उपरियम आदि सम्मीलित हैं)

General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws etc. of a general Character) issued by the Ministries of the
Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the
Administration of Union Territories)

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधायी विभाग)

(विधि साहित्य प्रकाशन)

शुद्धि पत्र

नई दिल्ली, 18 जून, 1997

सा.का.नि. 281.—भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड
3, उपखंड (1) तारीख, 3 अप्रैल, 1993, पृष्ठ 554
में प्रकाशित विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रा-
लय (विधायी विभाग) की अधिसूचना 1993 का
सा.का.नि. 171, तारीख 2 नवम्बर, 1992 के अंतर्गत
पाठ की पंक्ति 9 में “1992” के स्थान पर “1993”
पढ़ें।

[सं. ए-12018/1/91-वीएसपी (प्रशा)]
बाबू लाल, उप सचिव

MINISTRY OF LAW & JUSTICE

(Legislative Department)

(Vidhi Sahitya Prakashan)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 18th June, 1997

G.S.R. 281.—In the English Version of the
Notification of the Ministry of Law, Justice and
Company Affairs, (Legislative Department), No.
G.S.R. 171 of 1993 dated 2nd November, 1992
Published in Part II, Section 3, Sub Section (1)
of the Gazette of India dated 3rd April, 1993, at
page 554, in line 9, in sub-rule (1) of rule 1, for
“1992” read “1993”.

[No. A-12018/1/91-VSP(Admn.)]
BABU LAL, Dy. Secy

कार्मिक और लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय

(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

नई दिल्ली, 25 जून, 1997

सा. का. नि. 282.—केन्द्रीय सरकार, उप-नियम (1), तथा भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग) नियमावली, 1954 के नियम 4 के उपनियम (2) के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शवितदों का प्रयोग करते हुए गुजरात सरकार के परामर्श से भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग संख्या का निर्धारण) विनियमावली, 1955 में और आगे संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

- (1) इन विनियमों का नाम भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग संख्या का निर्धारण) तीसरा विनियमावली, 1997 है।
- (2) ये सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
- भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग भंडपा का निर्धारण) विनियमावली, 1955 की अनुसूची में “गुजरात” शीर्षक तथा इसके नीचे आने वाली प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :

“गुजरात”

1. राज्य सरकार के अधीन वरिष्ठ पद	81
महा निरीक्षक तथा पुलिस महा निरीक्षक पुलिस महानिदेशक तथा निदेशक, भ्रष्टाचार निरोधक छूटो, अहमदाबाद	1
पुलिस आयुक्त, अहमदाबाद शहर	1
विशेष पुलिस महा निरीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	1
विशेष पुलिस महा निरीक्षक, सी.आई.डी.	1
आमुचना, अहमदाबाद	1
महानिरीक्षक, कानून तथा व्यवस्था, अहमदाबाद पुलिस आयुक्त बड़ोदरा शहर	1
विशेष महा निरीक्षक पुलिस कम्प्यूटर तथा राज्य अपराध अभिलेख व्यूरो गांधीनगर	1
विशेष पुलिस महानिरीक्षक, प्रशासन	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, सशस्त्र पक्षक तथा प्रशिक्षण	1
पुलिस आयुक्त, राजकोट एवं सूरत	2
अपर आयुक्त, अहमदाबाद शहर	1
पुलिस उप महानिरीक्षक, सूरत रेंज, सूरत प्रधान, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, जूनागढ़	1
उप महा निरीक्षक पुलिस (रेंजेज)	3
उप महा निरीक्षक पुलिस सौराप्ट, साउथ रेंज, जूनागढ़	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, सी.आई.डी..	1
आमुचना छूटो	1

उप महा निरीक्षक पुलिस, पश्चिमी रेलवे	1
उप महा निरीक्षक पुलिस (मी.आई.डी.)	1
अपराध	1
उप गहु. निरीक्षक पुलिस, अहमदाबाद रेंज, अहमदाबाद	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, श्रीदोगिक मुरक्का, पुलिस कल्पणा तथा हिंजन मास्ले, अहमदाबाद	1
उप निदेशक, भ्रष्टाचार विरोधी व्यूरो	1
महा सहायक निरीक्षक पुलिस	3
उप-आयुक्त, पुलिस, अहमदाबाद शहर	7
उप आयुक्त, पुलिस, राजकोट, बड़ोदरा तथा सूरत	3
पुलिस अधीक्षक, मी.आई.डी. आगूचना व्यूरो	2
पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	2
पुलिस अधीक्षक, रेलवे	1
जिला पुलिस अधीक्षक	18
जिला पुलिस अधीक्षक, खेड़ा साउथ, आनन्द	1
जिला पुलिस अधीक्षक, पोरबन्दर	1
कमांडेंट, एस.आर.पी.एफ.	7
प्रधान एस.आर.पी.एफ. प्रशिक्षण केन्द्र, चौकी, जूनागढ़	1
पुलिस अधीक्षक मादक पदार्थ जी.एस., अहमदाबाद	1
प्रधान, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, बड़ोदरा	1
पुलिस उप आयुक्त, बड़ोदरा शहर	1
जिला पुलिस अधीक्षक, गांधी नार	1
जिला पुलिस अधीक्षक, पाटन	1
उप प्रधान, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, जूनागढ़	1
कमांडेंट ग्रुप	4
(एस.आर.पी.एफ.) ग्रुप, X	81
उकाई; एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XI	
बाब; एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XII	
गांधीनगर; एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XIII	
राजकोट)	
2. उपर्युक्त 1 का 40 प्रतिशत की दर से केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति आरक्षण	32
3. उपर्युक्त 1 तथा 2 के 33- $\frac{1}{2}$ प्रतिशत की दर से भारतीय पुलिस सेवा (भर्ती) नियमावली, 1954 के नियम 9 के अनुमार पदोन्नति द्वारा भरे जाने वाले पद	37
4. सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पद (उपर्युक्त 1 + 2 - 3)	76
5. उपर्युक्त 1 का 25 प्रतिशत की दर से प्रति-नियुक्ति आरक्षण	20

6. उपर्युक्त 1 का 20 प्रतिशत की दर से छुट्टी आरक्षण, कनिष्ठ पद तथा प्रशिक्षण आरक्षण	16
सीधी भर्ती के पद :	112
पदोन्नति पद :	37
कुल प्राधिकृत संख्या :	149

[नं. 11052/2/97-ग. भा. से (ii)-क]

मधुमिता डी० मित्रा, डेस्क अधिकारी

टिप्पणी : (1) इस अधिसूचना के जारी होने से पहले, गुजरात भारतीय पुलिस नेवा संबंध की प्राधिकृत पद संख्या 133 थी।

(2) मुख्य विनियम दिनांक 22 अक्टूबर, 1965 की अधिसूचना संख्या प्रम. आर. श्रो. 3351 द्वारा प्रकाशित किए गए थे। गुजरात ने संबंधित अनुसूची में प्रविष्टियों के बाद में दिनांक 29-4-60 के सा. का. नि. सं. 505, 6-10-62 के 1313, 28-11-64 के 1639, 25-6-75 के 348E, 21-11-81 के 609E, 16-7-82 के 498E, 28-8-82 के 706, 14-3-87 के 446, 16-12-89 के 915 और 31-3-95 के 320E द्वारा संशोधन किया गया था।

MINISTRY OF PERSONNEL, P. G. AND PENSIONS

(Department of Personnel and Training)

New Delhi, the 25th June, 1997

G.S.R. 252.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with sub-rule (1), and sub-rule (2) of Rule 4 of the Indian Police Service (Cadre) Rules, 1954, the Central Government in consultation with the Government of Gujarat hereby makes the following regulations further to amend the Indian Police Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, namely :—

1. (i) These regulations may be called the Indian Police Service (Fixation of Cadre Strength) Third Amendment Regulations, 1997.

(ii) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Schedule to the Indian Police Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, for the heading "Gujarat" and the entries occurring thereunder, the following shall be substituted, namely :—

"GUJARAT"

1. Senior Posts under the State Government	81
Director General and Inspector General of Police.	1
Director General of Police and Director, Anti Corruption Bureau, Ahmedabad.	1
Commissioner of Police, Ahmedabad City.	1
Special Inspector General of Police, C.I.D., Crime and Railways.	1
Special Inspector General of Police, C.I.D., Intelligence Ahmedabad.	1
Inspector General of Police (Law and Order) Ahmedabad.	1
Commissioner of Police, Vadodara City.	1
Special Inspector General of Police, Computer-cum-State Crime Record Bureau, Gandhi Nagar.	1
Special Inspector General of Police, Administration.	1
Deputy Inspector General of Police, Armed Units and Training.	1

Commissioner of Police, Rajkot & Surat.	2
Additional Commissioner, Ahmedabad City	1
Principal, Police Training College, Junagadh.	1
Deputy Inspector General of Police (Ranges).	3
Deputy Inspector General of Police, Saurashtra, South Range, Junagadh.	1
Deputy Inspector General of Police, Surat range, Surat.	1
Deputy Inspector General of Police, CID, IB.	1
Deputy Inspector General of Police, Western Railways	1
Deputy Inspector General of Police (CID), Crime	1
Deputy Inspector General of Police, Ahmedabad Range, Ahmedabad.	1
Deputy Inspector General of Police, Industrial Security, Police Welfare and Harijan Affairs, Ahmedabad.	1
Deputy Director, Anti Corruption Bureau	1
Assistant Inspector General of Police	3
Deputy Commissioner of Police, Ahmedabad City	7
Deputy Commissioner of Police, Rajkot, Vadodara and Surat	3
Superintendents of Police, CID, IB	2
Superintendent of Police, CID, Crime and Railways	2
Superintendent of Police, Railways	1
District Superintendent of Police	18
District Superintendent of Police, Kheda South Anand	1
District Superintendent of Police, Porbander	1
Commandants, S.R.P.F.	7
Principal, S.R.P.F. Training Centre, Chowkey, Junagadh	1
Superintendent of Police, Narcotics, GS Ahmedabad	1
Principal, Police Training School, Vadodara	1
Deputy Commissioner of Police, Vadodara City	1
Distt. Superintendent of Police, Gandhinagar	1
District Superintendent of Police, Patan	1
Vice-Principal, Police Training College, Junagadh	1
Commandants Group (SRPF, Gr. X Utkal; SRPF, Gr. XI Vay; SRPF, Gr. XII Gandhinagar; SRPF, Gr. XIII, Rajkot)	4
	81
2. Central Deputation Reserve @40 per cent of 1 above	32
3. Posts to be filled by promotion in accordance with Rule 9 of the I.P.S. (Recruitment) Rules, 1954 @33-1/3 per cent of 1 and 2 above	37
4. Posts to be filled by Direct Recruitment (1+2-3) above.	76
5. Deputation Reserve @25% of 1 above	20
6. Leave Reserve, Junior Posts and Training Reserve 20 per cent of 1 above	16
Direct Recruitment Posts :	112
Promotion Posts :	37
Total Authorised Strength	149

[No. 11052/2/97-AIS(II)-A]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

NOTE : (1) Prior to the issue of this Notification, the total authorised strength of Gujarat I.P.S. Cadre was 133.

(2) The Principal Regulations were published vide Notification No. SRO 3351 dated 22nd October, 1955. Entries in the Schedule in respect of Gujarat were subsequently amended vide GSR Nos. 505, 1313, 1639, 348E, 609-E, 706, 162, 446, 915 and 320(E) dated 29-4-60, 6-10-62, 28-11-64, 25-6-75, 21-11-81, 16-7-82, 28-8-82, 14-3-87, 4-6-88, 16-12-89 and 31-3-95 respectively.

नई दिल्ली, 25 जून, 1997

गा.वा.नि. 283.—भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) नियम-काली, 1954 के नियम 11 के साथ पठित अदिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की अपधारा (1) द्वारा प्रदत्त अन्तिमों का प्रयोग करने हुए, केंद्रीय सरकार गुजरात राज्य के परामर्श में भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में आंश आगे संशोधन करने के लिए एवं द्वारा निम्ननियित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का नाम भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) तीसरा संशोधन नियमावली, 1997 है।

(2) ये सरकारी गजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में :—

(क) अनुसूची-III में, राज्य गरकार के अधीन भारतीय पुलिस सेवा में समय वेतनमान से ऊपर वेतन वाले पदों की शीर्षक “क” के अन्तर्गत सारणी में प्रथम कालम तथा दूसरे तथा तीसरे कालम की तदनुसूची प्रविष्टियों में आने वाली “गुजरात” प्रविष्टि के लिए, निम्ननियित प्रविष्टियां प्रतिस्थापित की जाएंगी, अर्थात् :—

राज्य पद के व्यारे	वेतन/वेतनमान	रुपए
गुजरात महा निदेशक तथा पुलिस महा नियिक	7600—8000	
पुलिस महा निदेशक तथा निदेशक भ्रष्टाचार निरोधक व्यूरो, अहमदाबाद	7600—8000	
पुलिस आयुक्त, अहमदाबाद नगर विधेप पुलिस महानियिक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	5900—200—6700	
पुलिस महानियिक, कानून तथा व्यवस्था, अहमदाबाद	—	—यथोपरि—
विधेप पुलिस महानियिक, सी.आई.डी., आमूचना, अहमदाबाद	—	—यथोपरि—
विधेप पुलिस महानियिक, प्रशासन पुलिस आयुक्त, बदोदडा नगर	5900—200—6700	—यथोपरि—
पुलिस महा नियिक, कम्प्यूटर एवं राज्य अपराध रिकार्ड व्यूरो गांधीनगर	—	—यथोपरि—

पुलिस उप महानियिक, सरस्वत	5100—150—
यूनिट तथा प्रशिक्षण	5400
(बाद का 18वां वर्ष) —	—
150—6150	
पुलिस आयुक्त, राजकोट तथा सूरत	—यथोपरि—
प्रपर आयुक्त, अहमदाबाद नगर	—यथोपरि—
प्रिसिपल, पुलिस प्रशिक्षण कालेज, जूनागढ़	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक (रेंज)	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक, सौराष्ट्र, दक्षिण रेंज, जूनागढ़	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक, सी.आई.डी., आमूचना व्यूरो	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक, पश्चिमी रेलवे	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक, सी.आई.डी., अपराध	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक, सूरत रेंज, सूरत	—यथोपरि—
पुलिस उप महानियिक, अहमदाबाद रेंज, अहमदाबाद	—यथोपरि—
उप पुलिस महानियिक, आद्योगिक मुरक्का, पुलिस कल्याण तथा हरिजन कार्य, अहमदाबाद	—यथोपरि—
(ख) अनुसूची-III में, समय वेतनमान में वेतन के अतिरिक्त विशेष वेतन वाले पदों सहित राज्य सरकारों के अधीन भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ समय वेतनमान में वेतन वाले पदों को शीर्षक “ख” के अन्तर्गत सारणी में, प्रथम कालम तथा प्रथम कालम की तदनुसूची प्रविष्टि तथा दूसरे कालम की तदनुसूची प्रविष्टि में आने वाली “गुजरात” प्रविष्टि के लिए, निम्नलिखित प्रविष्टि प्रतिस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—	
राज्य	पद के व्यारे
उप निदेशक, भ्रष्टाचार निरोधी व्यूरो	—
पुलिस सहायक महा नियिक	
पुलिस उपायुक्त, अहमदाबाद नगर	
पुलिस उपायुक्त राजकोट, बदोड़रा और सूरत	
पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., आमूचना व्यूरो	
पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	
पुलिस अधीक्षक, रेलवे	

पुलिस जिला अधीक्षक
पुलिस जिला अधीक्षक, दक्षिण,
आनन्द
पुलिस जिला अधीक्षक, पोरबंदर
कमान्डेट, प.स. आर.पी. एफ
प्रिसिपल प.स. आर.पी. एफ
• प्रणिक्षण केन्द्र, चौकी, जूनागढ़
पुलिस अधीक्षक, मादक पदार्थ,
जो.एस., अहमदाबाद
प्रिसिपल, पुलिस प्रशिक्षण स्कूल,
बदोदडा
पुलिस उपायुक्त, बदोदडा नगर
पुलिस जिला अधीक्षक, गांधीनगर
पुलिस जिला अधीक्षक, पाटन
उप-प्रधानाचार्य, पुलिस प्रशिक्षण
कालेज, जूनागढ़
कमान्डेट ग्रुप (एस.आर.पी.एफ
ग्रुप X उकाई;
एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XI
बाव;
एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XII
गांधीनगर;
एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XIII राजकोट।

[सं. 11052/2/97-अ.भा. से. (ii)-ख]

मधुमिता दी. मित्रा, डेस्क अधिकारी

टिप्पणी : ये मुख्य नियम दिनांक 14 सितम्बर, 1954 की राजपत्र संख्या 158 द्वारा प्रकाशित किए गए। गुजरात राज्य के बारे में अनुसूची-III में प्रविष्टियां बाद में क्रमशः दिनांक 29-4-60, 28-11-64, 25-6-75, 21-11-81, 16-7-82, 28-8-82, 19-8-87 तथा 16-12-89 की सा. का.नि. संख्याओं 506, 1640, 349 ई, 610 ई, 499 ई, 707, 163 तथा 913 द्वारा संगोष्ठित की गई।

New Delhi, the 25th June, 1997

G.S.R. 28.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with Rule 11 of the Indian Police Service (Pay) Rules, 1954, the Central Government, in consultation with the Government of Gujarat, hereby makes the following rules further to amend the Indian Police Service (Pay) Rules, 1954, namely :—

1. (1) These rules may be called the Indian Police Service (Pay) Third Amendment Rules, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Police Service (Pay) Rules, 1954 :

(a) In Schedule III, in the Table under the heading 'A' Posts carrying pay above the time scale of pay of the Indian Police Service under the State Government for the entry "Gujarat" occurring in the first column and the corresponding entries in the second

and third columns, the following shall be substituted, namely :—

GUJARAT :

Particulars of post Director General and Inspector General of Police	Pay/Scale of pay Rs. 7600—8000.
Director General of Police and Director, Anti-Corruption Bureau, Ahmedabad	Rs. 7600—8000
Commissioner of Police, Ahmedabad City	Rs. 5900-200-6700
Special Inspector General of Police CID, Crime and Railways	-do-
Special Inspector General of Police CID, Intelligence, Ahmedabad	-do-
Inspector General of Police (Law and Order), Ahmedabad	-do-
Commissioner of Police, Vadodara City	-do-
Special Inspector General of Police, Computer-cum-State Crime Record Bureau, Gandhinagar	-do-
Special Inspector General of Police Administration	-do-
Deputy Inspector General of Police	Rs. 5100-150-5400
Armed Units and Training	(18th year or later)-150-6150

Commissioner of Police, Rajkot & Surat	-do-
Additional Commissioner, Ahmedabad City	-do-
Principal, Police Training College, Junagadh	-do-
Deputy Inspector General of Police (Ranges)	-do-
Deputy Inspector General of Police Saurashtra, South Range, Junagadh	-do-
Deputy Inspector General of Police, Surat Range, Surat	-do-
Deputy Inspector General of Police, CID, IB	-do-
Deputy Inspector General of Police, Western Railways	-do-
Deputy Inspector General of Police (CID) Crime	-do-
Deputy Inspector General of Police Ahmedabad Range, Ahmedabad	-do-
Deputy Inspector General of Police, Industrial Security, Police Welfare and Harijan Affairs, Ahmedabad	-do-

(b) In Schedule III, in the table under the heading 'B' Post carrying pay in the Senior Time Scale of the Indian Police Service under the State Governments including posts carrying special pay in addition to pay in the Time Scale for the entry 'Gujarat' occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following entries shall be substituted namely :—

State	Particulars of the posts
Gujarat	Deputy Director, Anti-Corruption Bureau. Assistant Inspector General of Police. Deputy Commissioner of Police, Ahmedabad City. Deputy Commissioner of Police, Rajkot, Vadodara and Surat. Superintendent of Police, CID, IB. Superintendent of Police, CID, Crime and Railways. Superintendent of Police, Railways. District Superintendent of Police. District Superintendent of Police, Kheda South, Anand.

District Superintendent of Police, Porbander.
 Commandant, S.R.P.F.
 Principal S.R.P.F. Training Centre, Chowkay, Junagadh.
 Superintendent of Police, Narcotics, G.S. Ahmedabad.
 Principal, Police Training School, Vadodara.
 Deputy Commissioner of Police, Vadodara City.
 District Superintendent of Police, Gandhinagar.
 District Superintendent of Police, Patan.
 Vice-Principal, Police Training College, Junagadh.
 Commandants Group (SRPF, Gr. X Ukai, SRPF, Gr. XI Vav; SKPF, Gr. XII, Gandhinagar; SRPF, Gr. XIII, Rajkot).

NOTE.—The Principal Rules were published vide Gazette No. 158, dated 14th September, 1954, Entries in Schedule II in respect of Gujarat were subsequently amended vide G.S.R. Nos. 506, 1640, 349-E, 610-E, 499-F, 707, 163 and 913 dated 29-4-60, 28-11-64, 25-6-73, 21-11-81, 16-7-82, 28-8-82, 14-3-87 and 16-12-89 respectively.

[No. 11052/2/97-AIS(II)-B]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

नई दिल्ली, 26 जून, 1997

सा. का. नि. 284.—भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियमावली, 1954 के नियम 4 के उप नियम (2) के साथ पठित अधिन भारतीय सेवा अधिनियम 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार महाराष्ट्र सरकार के परामर्श से, भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियन्त्रण) विनियमावली, 1955 में और आगे संशोधन करने के लिए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन विनियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियन्त्रण) द्वारा संशोधन विनियमावली, 1997 है।

(2) ये नियम सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रक्षेत्र होंगे।

2. भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियन्त्रण) विनियमावली, 1955 की अनुसूची में 'महाराष्ट्र' शीर्षक और उसके अंतर्गत आगे वाली प्रविधियों के स्थान पर निम्नलिखित प्रविधि प्रतिस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

महाराष्ट्र

1. राज्य सरकार के अधीन वरिष्ठ पद	190
सरकार के मूल्य सचिव और विकास आयुक्त	1
सरकार के अतिरिक्त मूल्य सचिव	1
सरकार के अतिरिक्त मूल्य सचिव, विदरभा विकास	1
सरकार के प्रधान सचिव	14
विभागीय जांच के आयुक्त	1

महाराष्ट्र, गशवंतराव आयुक्त विकास प्रकाशन	1
अकादमी	
सरकार के सचिव	23
मण्डलीय आयुक्त	6
विकी कर आयुक्त	1
बंदोवस्त आयुक्त और निदेशक, भूमि रिकार्ड	1
महाराष्ट्र आयुक्त एवं सहकारी समितियों के	1
पंजीयकार	1
विकास आयुक्त, उद्योग	1
मध्य नियेध तथा उत्पाद मूल्क आयुक्त	1
मूल्य मंत्री के सचिव	1
दिशेष आयुक्त, नई दिल्ली	1
राज्यपाल के सचिव	1
शर्करा आयुक्त	1
परिवहन आयुक्त	1
डेरी विकास आयुक्त	1
आयुक्त, खाच तथा द्वा प्रशासन	1
मूल्य प्रोटोकाल अधिकारी	1
कर्मचारी राज्य बीमा योजना आयुक्त	1
मुद्र्य चूनाव अधिकारी तथा सरकार के सचिव	1
कृषि आयुक्त	1
जनजाति विकास के आयुक्त	1
संयुक्त सचिव/अपर सचिव/विशेष सचिव	40
समाजी वस्त्र उप नगर जिला	1
ममाहर्ता	30
प्रपर समाहर्ता	4
मुख्य कर्यालयी अधिकारी, जिला परिषदें	29
नागरिक आपूर्ति निदेशक (भण्डारण तथा संचालन)	1
भूमि रिकार्ड उप निदेशक	1
पंजीकरण महानीरीक्षक	1
विकी कर अपर आयुक्त	1
अपर आयुक्त उद्योग	1
विकी कर उप-आयुक्त	4
समाज कल्याण निवेशक	1
अपर आयुक्त	6
हथकरघा पावरलूम सरकारी बस्त्र उद्योग	1
रोजगारनिदेशक	1
राशनिग नियंत्रक	1
जनजातिय उप-योजना अपर आयुक्त	2
लघु बचत निदेशक	1
खेल तथा युवा सेवाओं के निवेशक	1
	190
	—
2. केन्द्रीय प्रतिनियुक्त रिजेक्ट उपर्युक्त मद 1 के	
40% की दर से	76

3. भाषप्रतीक्षा विभाग भर्ती नियमावली 1964 के नियम 8 के अनुसार पदोन्नति अथवा चयन द्वारा भरे जाने वाले पद उपर्युक्त मद 1 और 2 के 33-1/3 प्रतिशत की दर में	38
4. सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पद उपर्युक्त मद 1 और 2 के योग में से 3 छटाकर	178
5. प्रतिनियुक्ति रिजर्व उपर्युक्त मद 1 के 25 प्रतिशत की दर से	47
6. छुट्टी रिजर्व, कनिष्ठ पद और प्रशिक्षण रिजर्व उपर्युक्त मद 1 के 20 प्रतिशत की दर में	38
सीधी भर्ती वाले पद	263
पदोन्नति वाले पद	88
कुल प्राधिकृत पद	351

[सं. 11031/1/96-अ. भा. मे (II)-क]
मध्यसिता डी. मिश्रा. ईस्क अधिकारी

टिप्पणी : (1) इस अधिसूचना के जारी होने से पहले महाराष्ट्र (मा.प्र.सं.) की कुल प्राधिकृत पद संख्या 348 थी।

(2) मुख्य विनियम दिनांक 22-10-55 के सा. का. नि. सं. 3350 द्वारा गजट में प्रकाशित किए गए थे। महाराष्ट्र संवर्ग से संबंधित विनियमों को बाद की निम्नलिखित सा.का.नि. संख्याओं द्वारा संशोधित किए गये थे:—

185	ई तारीख	25-4-74,	1299	तारीख
7-12-74,	465	ई तारीख	23-7-76,	158
तारीख	9-2-80,	294	ई तारीख	15-4-81,
788	तारीख	29-8-81,	320	ई तारीख
8-4-83,	588	तारीख	13-3-83,	568ई
तारीख	15-7-85,	835	तारीख	7-9-85,
190	तारीख	26-3-88,	658	तारीख
20-8-88,	1003	तारीख	31-12-88,	340ई
तारीख	3-3-89,	69 तारीख	22-2-92,	33 तारीख
16-1-93,	तथा	319	ई तारीख	31-3-95
झारा	गंगोधित	किया	गया	था ।

New Delhi, the 26th June, 1997

G.S.R. 284.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with sub-rule (2) of rule 4 of the Indian Administrative Service (Cadre) Rules, 1954, the Central Government in consultation with the Government of Maharashtra hereby makes the following regulations further to amend the Indian Administrative

Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, namely:—

- (1) These regulations may be called the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Second Amendment Regulations, 1997.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Schedule to the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, for the heading "Maharashtra" and the entries occurring thereunder, the following shall be substituted namely :—

MAHARASHTRA

1.	Senior Posts under the State Government	190
	Chief Secretary to Government & Development Commissioner	1
	Additional Chief Secretary to Government	1 1
	Additional Chief Secretary to Government, Vidarbha Development	1
	Principal Secretary to Government	14
	Commissioner of Departmental Enquiries	1
	Director General, Yeswantrao Chavan Academy of Development Administration	1
	Secretary to Government	23
	Commissioner of Division	6
	Commissioner of Sales Tax	1
	Settlement Commissioner and and Director of Land Records	1
	Secretary to Governor	1
	Commissioner, Sugar	1
	Commissioner for Cooperation and Registrar of Cooperative Societies	1
	Development Commissioner, Industries	1
	Commissioner of Prohibition & Excise	1
	Secretary to Chief Minister	1
	Special Commissioner, New Delhi	1
	Transport Commissioner	1
	Dairy Development Commissioner	1

Commissioner, Food & Drugs Administration	1	5. Deputation Reserve @ 25% of item 1 above	47
Chief Protocol Officer & Secretary to Government	1	6. Leave Reserve, Junior Posts & Training Reserve @ 20% of item 1 above	38
Commissioner of Employees State Insurance Scheme	1		
Chief Electoral Officer & Secretary to Government	1	7. Direct Recruitment Posts	263
Commissioner of Agriculture	1	Promotion Posts	88
Commissioner of Tribal Development	1		
Joint Secretary/Addl. Secy Spl. Secy.	40	Total Authorised Strength	351
Collector	30		
Additional Collector	4		
Chief Executive Officer, Zila Parishad	29		
Director of Civil Supplies (Storage & Movement)	1		
Deputy Director of Land Records	1		
Inspector General of Registration	1		
Additional Commissioner of Sales Tax	1		
Additional Comissioner of Industries	1		
Deputy Commissioner of Sales Tax	4		
Director of Social Welfare	1		
Additional Commissioner	6		
Director of Handlooms, Power-looms and Cooperative Textiles	1		
Director of Employment	1		
Controller of Rationing	1		
Additional Commissioner of Tribal Sub-Plan	2		
Collector, Bombay Sub-urban District	1		
Director of Small Savings	1		
Director of Sports & Youth Services	1		
	190		
2. Central Deputation Reserve @ 40% of item 1 above	76		
3. Posts to be filled by promotion or selection in accordance with Rule 8 of the I.A.S. (Recruitment) Rules, 1954 @ 33-1/3% of item 1 and 2 above	88		
4. Posts to be filled by direct recruitment 1 plus 2 minus 3 above	178		

[No. 11031/1/96-IAS (U) A]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

Note 1 : The Total authorised strength of Maharashtra (IAS) cadre prior to the issue of this Notification was 348.

Note 2 : The Principal Regulations were published in the Gazette vide SRO No. 3350 dated 22-10-55. The Regulations in respect of Maharashtra cadre have been amended vide G.S.R. No. 185(E) dated 25-4-74, 1299 dated 7-12-74, 465(E) dated 28-7-76, 158, dated 9-2-80, 294(E) dated 15-4-81, 788 dated 29-8-81, 320(E) dated 8-4-83, 588 dated 13-8-83, 568(E) dated 18-7-85, 835 dated 7-9-85, 190 dated 26-3-88, 658 dated 20-8-88, 1003 dated 31-12-88, 340(E) dated 3-3-89, 69, dated 22-2-92, 33 dated 16-1-93 and 319(E), dt. 31-3-95.

नई दिल्ली, 26 जून, 1997

सा. का. नि. 285.—भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 के नियम (11) के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (i) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, महाराष्ट्र सरकार के परामर्श से भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 के आगे और संशोधन करने के लिए एतद्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) द्वासा संशोधन नियम, 1997 है।

(2) ये नियम सरकारी राज्यपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रदृश्य होंगे।

2. भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में :—

(क) अन्तर्गत—III—क में राज्य सरकारों के अधीन भारतीय प्रशासनिक सेवा में समय वेतनमान में अधिक वेतन वाले पदों के लिए तालिका के पहले कालम में आने वाली “महाराष्ट्र” प्रविधि के लिए और दूसरे तथा तीसरे कालम में आने वाली तदनुस्पी प्रविधियों के

रथान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया
जाएगा, अर्थात् :—

महाराष्ट्र :

सरकार के मुख्य सचिव तथा विकास आयुक्त	8000
सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव	8000
सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय विद्यालय	800
सरकार के प्रधान सचिव	7300-100-7600
विभागीय जांच के आयुक्त	7300-100-7600
महानिदेशक, यशवंतराव चह्वाण विकास प्रशासन अकादमी	7300-100-7600
सरकार के सचिव	5900-200-6700
मण्डलीय आयुक्त	—यथोपरि—
बिक्री कर आयुक्त	—यथोपरि—
बंदोबस्त आयुक्त एवं भूमि रिकार्ड निदेशक	—यथोपरि—
सहकारिता आयुक्त एवं सहकारी समितियों के पंजीकार	5900-200-6700
विकास आयुक्त, उद्योग	—यथोपरि—
महानिदेश एवं उत्पाद शुल्क आयुक्त	—यथोपरि—
मुख्य मंत्री के सचिव	—यथोपरि—
राज्यपाल के सचिव	—यथोपरि—
विशेष आयुक्त, नई दिल्ली	—यथोपरि—
शर्करा आयुक्त	—यथोपरि—
परिवहन आयुक्त	—यथोपरि—
शहरी विकास आयुक्त	—यथोपरि—
आयुक्त, खाद्य तथा दवा प्रशासन	—यथोपरि—
मुख्य प्रोटोकाल अधिकारी	—यथोपरि—
कर्मचारी राज्य बीमा योजना आयुक्त	—यथोपरि—
मुख्य अनुनाद अधिकारी तथा सरकार के सचिव	—यथोपरि—
कृषि आयुक्त	—यथोपरि—
जनजाति विकास के आयुक्त	—यथोपरि;

(क) अनुसूची-III-ब, में राज्य सरकारों के अधीन भारतीय प्रणासनिक सेवा में वर्त्तित वेतनमान बाने (समय वेतन-मान के वेतन के अतिरिक्त विशेष वेतन पाने वाले दों सहित) पदों के लिए, तालिका के पहले कालम में आने वाली "महाराष्ट्र" प्रविष्टि के लिए तथा दूसरे कालम में आने वाली तदनुस्पष्टी प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित स्थापित किया जायेगा, अर्थात् :—

संयुक्त सचिव/अपर सचिव/विशेष सचिव
समाहृत

समाहृती, वर्वर्ष उपनगर जिला

सपर समाहृती

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद
अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद
नागरिक आपूर्ति निदेशक
(भंडारण एवं संचालन)

भूमि रिकार्ड के उप निदेशक
पंजीकरण महानिरीक्षक
बिक्री कर अपर आयुक्त
अपर आयुक्त, उद्योग
बिक्री कर उप आयुक्त
समाज कल्याण निदेशक
अपर आयुक्त

हथकरघा, पावरलूम और सहकारी बम्ब निदेशक
रोजगार निदेशक
राष्ट्रानिग नियन्त्रक
जनजातीय उप-योजना अपर आयुक्त
सधु बचत निदेशक
खेल पथा युवा सेवाओं के निदेशक

[सं. 11031/1/96—अ. भा. से. (II)-ख]

मध्यमिता डी. मित्रा, डैस्क अधिकारी

टिप्पणी :—मुख्य नियम 14-9-54 की गजट सं. 158 द्वारा प्रकाशित किए गए थे। अनुसूची-III के मुख्य नियमों में महाराष्ट्र संवर्ग संबंधित नियमों को मा.का.नि. ग. 186, दिनांक 25-4-87, 1300 दिनांक 7-12-74, 466 ई, दिनांक 23-7-76, 159 दिनांक 9-2-80, 295 ई दिनांक 15-4-81, 569 ई दिनांक 15-7-85, 919 दिनांक 5-10-85, 659 दिनांक 20-8-88, 1004 दिनांक 31-12-88, 341 ई दिनांक 3-3-89, तथा 68 दिनांक 22-2-92 द्वारा मणिधित किया गया था।

New Delhi, the 26th June, 1997

G.S.R. 285.—In exercise of the powers conferred by sub-section (i) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951) read with rule 11 of the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954, the Central Government, in consultation with the Government of Maharashtra hereby makes the following rules further to amend the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954, namely :—

1. (1) These rules may be called the Indian Administrative Service (Pay) second amendment Rules, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Administrative Service (Pay), Rules, 1954 :—

(a) In Schedule III-A Posts carrying pay above the time scale in the Indian Administrative Service under the State Governments, in the Table for the entry "Maharashtra" occurring in the first column and the corresponding entries in the second and third columns, the following shall be substituted, namely :—

Maharashtra

Chief Secretary to Government & Development Commissioner	Rs. 8000
Additional Chief Secretary to Government	Rs. 8000
Addl. Chief Secretary to Government Vidarbha Development	Rs. 8000
Principal Secretary to Government	Rs. 7300-100-7600
Commissioner of Departmental Enquiries	Rs. 7300-100-7600
Director General, Yeswantrao Chavan Academy of Development Administration	Rs. 7300-100-7600
Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Division	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Sales Tax	Rs. 5900-200-6700
Settlement Commissioner & Director of Land Records	Rs. 5900-200-6700
Commissioner for Co-operation & Registrar of Cooperative Societies	Rs. 5900-200-6700
Commissioner, Food & Drugs Administration	Rs. 5900-200-6700
Chief Protocol Officer & Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Employees State Insurance Scheme	Rs. 5900-200-6700
Chief Electoral Officer & Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Development Commissioner, Industries	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Prohibition & Excise	Rs. 5900-200-6700
Commissioner Shoor Secretary to Chief Ministers	Rs. 5900-200-6700
Secretary to Governor	Rs. 5900-200-6700

Special Commissioner, New Delhi Rs. 5900-200-6700

Transport Commissioner Rs. 5900-200-6700

Dairy Development Commissioner RS. 5900-200-6700

Commissioner of Agriculture Rs. 5900-200-6700

Commissioner of Tribal Development Rs. 5900-200-6700

(b) In Schedule III-B Posts carrying pay in the senior scale of the Indian Administrative Service under the State Governments (including posts carrying special pay in addition to pay in the time scale), in the Table, for the entry "Maharashtra" occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following shall be substituted, namely :—

Joint Secretary|Addl. Secretary|Special Secy. Collector

Collector, Bombay Suburban District. Additional Collector

Chief Executive Officer, Zilla Parishad

Director of Civil Supplies (Storage & Movement)

Deputy Director of Land Records

Inspector General of Registrations

Additional Commissioner of Sales Tax

Additional Commissioner of Industries

Deputy Commissioner of Sales Tax

Director of Social Welfare

Additioal Commissioner

Director of Handlooms, Powerlooms & Cooperative Textiles

Director of Employment

Director of Sports & Youth Services

Controller of Rationing

Addl. Commissioner for Tribal Sub-Plan

Director of Small Savings.

[No. 110311/96-AIS(II)-B]
MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

Note.—The Principal Rules were published vide Gazette No. 158 dated 14th September, 1954. Schedule III of the Principal Rules, in respect of Maharashtra was amended vide G.S.R. No. 186 dated 25th April, 1974, 1300 dated 7th December, 1974, 466E dated 23rd July, 1976, 159 dated 9th February, 1980, 295E dated 15th April, 1981, 569E dated 15th July, 1985, 919 dated 5th October, 1985, 659 dated 20th August, 1988, 1004 dated 31st December, 1988, 341E dated 3rd March, 1989 and 68 dated 22nd February, 1992.

(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

तई दिल्ली, 27 जून, 1997

मान्यता नं ० २८६—भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियमावली, १९५४ के नियम ४ के उपनियम (२) के साथ पठित आदित्य भारतीय सेवा अधिनियम, १९५१ (१९५१ का ६१) की धारा ३ को द्वाधारा (१) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, राजस्वान सरकार के परामर्श से भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद सेवा का नियन्त्रण) विनियमावली, १९५५ में और प्राप्त संशोधन करने के लिए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, अत्यार्थ :—

१. (१) इन नियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (भवर्ग पद संवर्ग का नियन्त्रण) तीसरा यंशोदय विनियमावली, १९९७ है।

(२) ये सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

२. भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद सेवा का नियन्त्रण) विनियमावली, १९५५ की अनुसूची में “राजस्वान” शीर्षक तथा उसके अधीन आने वाली प्रविधियों के लिए निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जायगा, अत्यार्थ :—

१. राज्य सरकार के अधीन वरिष्ठ पद	१४१
सरकार के मुख्य सचिव	१
अध्यक्ष, राजस्व बोर्ड	१
अध्यक्ष, राजस्वान विभाग सेवा एवं अपील अधिकरण	१
निदेशक, एच० न०० एम० राज्य नौकर प्रशासन संस्थान	१
सरकार के प्रमुख सचिव	६
अध्यक्ष, राजस्वान कर बोर्ड	१
मुख्य मंत्री के सचिव	१
भरकार के निर्वाचन राजिय एवं पदेन मुख्य निर्वाचन अधिकारी	१
सरकार के सचिव	१५
राज्यपाल के सचिव	१
विभागीय आयुक्त	६
विभागीय जांच के लिए आयुक्त	१
वाणिज्यिक कर आयुक्त	१
सदस्य, राजस्व बोर्ड	७
प्रायुक्त, केन्द्रीय विकास	१
परिवहन आयुक्त	
सरकार के विशेष सचिव	१०
सरकार के इप सचिव	२०
बैंडोस्ट आयुक्त तथा पदेन वक्फबंदी निदेशक	१
निदेशक ग्रामीण विकास तथा पंचायत राज	१
पंजीयक सहकारी समितियां	१
समाहर्ता	३१
निदेशक उद्योग	१
निदेशक, पमघारा विकास तथा मूद्य सरकार	१
निदेशक, प्राप्तिक तथा माध्यमिक शिक्षा	१
निदेशक, रोजगार	१
निदेशक, लघु वर्षत	१
निदेशक, भेड़ और ऊन	१
निदेशक, महिलाएं तथा बच्चा विकास	१
निदेशक, राज्य ओमा तथा भविष्य निधि	१
श्रम आयुक्त	१
प्रायुक्त, उत्पाद गुरु	१

उप निदेशक आयुक्त, राजस्वान नहर परियोजना

भवर समाहर्ता (विकास)

ग्राम आयुक्त, वाणिज्यिक कर

श्रवर रजिस्ट्रार सहकारी समितियां

पंजीयक, राजस्व बोर्ड

भवर आयुक्त, आद्य तथा सिविल आयुक्त

१८ र अधिकारी विकास आयुक्त

निदेशक, सूचना तथा जन सम्पर्क

पर्यटन निदेशक

निदेशक, फैसलूर

रजिस्ट्रेशन तथा स्टेप्स के महा निदेशक

मर्मिच, राजस्वान लोक रोक आयोग

निदेशक, समाज कल्याण

१

३

१

१

१

२

१

१

१

१

१

१

११

२. केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति रिजर्व उक्त १ के ४०% की दर ज्ञ

५६

३. पदोन्नति तथा अपन द्वारा भरे जाने वाले पद उक्त १ और २ को छोड़कर उक्त ३३-१/३% की दर में

६५

४. सीधी सर्ती वाले पद उक्त १ और २ के जोड़ में से ३ अधिकार

१३२

५. प्रतिनियुक्ति रिजर्व उक्त १ के २५% की दर से

३५

६. छह्ती रिजर्व, अनियुक्त पद तथा प्राप्तिक रिजर्व उक्त १ के २०% की दर से

२८

सीधी सर्ती वाले पद

१९५

पदोन्नति वाले पद

६५

कुल प्राविलास पद भंडा

२६०

[सं ११०३।/२/९४-प्र०मा०से०-॥(क)]

मधुमिता द्वी० मिश्रा, डेस्क अधिकारी

टिप्पणी : (१) इस अधिसूचना के आरी होने से पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा के राजस्वान सर्वांकी कुल प्राप्तिक पद सेवा २५२ थी।

(२) मुख्य नियम, राजपत्र में दिनांक २२-१९-५५ का का० नि० भा० संख्या ३३५० द्वारा प्रकाशित किए गए थे। राजस्वान सर्वांकी तंत्र अधिकारी विनियम क्रमांक: दिनांक २८-४-७४, १४-९-७४, २०-१-७४, २२-३-७५, १०-२-७६, २३-८-७७, २४-६-७८, १७-११-७९, १८-१२-८२, १७-१०-८७, ७-९-९१, २३-५-९२ और ३१-३-९५ की सांकानि० संख्या ८९०, ९७८, ११५२, ३९९, ७२६, ५८४६, ८०७, ६२४६, ७६३६, ७६८, ४९३, २३८ और ३१६६ द्वारा संशोधित किए गए।

(Department of Personnel & Training)

New Delhi, the 27th June, 1997

G.S.R. 286.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with sub-rule (2) of rule 4 of the Indian Administrative

Service (Cadre) Rules, 1954 the Central Government, in consultation with the Government of Rajasthan, hereby makes the following regulations further to amend the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, namely :—

1. (1) These regulations may be called the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Third Amendment Regulations, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Schedule to the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955 for the heading "Rajasthan" and the entries occurring thereunder, the following shall be substituted, namely:—

1. Senior posts under the State Government	141
Chief Secretary to Government	1
Chairman, Board of Revenue	1
Chairman, Rajasthan Civil Services Appellate Tribunal	1
Secretary to Chief Minister	1
Principal Secretary to Government	6
Chairman, Rajasthan Tax Board	1
Director HCM Rajasthan State Institute of Public Administration	1
Chief Electoral Officer-cum-ex-Officio Principal Secretary to Government, Elections	1
Secretary to Government, Elections	
Secretary to Government	15
Divisional Commissioners	6
Commissioner for Departmental Enquiries	1
Commissioner, Commercial Taxes	1
Member, Board of Revenue	7
Commissioner, Area Development	1
Transport Commissioner	1
Secretary to Governor	1
Special Secretary to Government	10
Deputy Secretary to Government	20
Settlement Commissioner & Ex-Officio Director of Consolidation	1
Director, Rural Development & Panchayat Raj	1
Registrar, Cooperative Societies	1
Collectors	31

Director of Industries	1
Director, Watershed Development & Soil Conservation	1
Director, Primary & Secondary Education	1
Director Employment	1
Director, Small Savings	1
Director, Sheep & Wool	1
Director, Women and Child Development	1
Director, State Insurance & Provident Fund	1
Labour Commissioner	1
Commissioner, Excise	1
Commissioner Colonisation, Rajasthan Canal Project	1
Additional Collector (Development)	8
Addl. Commissioner, Commercial Tax	1
Addl. Registrar, Cooperative Societies	1
Registrar, Board of Revenue	1
Addl. Commissioner, Food & Civil Supplies	1
Addl. Area Development Commissioner	2
Director Information & Public Relations	1
Director of Tourism	1
Director, Computer	1
Inspector General of Registration & Stamps	1
Secretary, Rajasthan Public Service Commission	1
Director, Social Welfare	1
	141
2. Central Deputation Reserve @ 40 per cent of item 1 above	56
3. Posts to be filled by promotion and Selection @ 33.3 per cent of 1 plus 2 above.	65
4. Director Recruitment posts (1 plus 2 minus 3 above)	132
5. Deputation Reserve @ 25 per cent of item 1 above	35
6. Leave Reserve, Junior Posts and Training Reserve @ 20 per cent of item 1 above.	28
Direct Recruitment Posts	195

New Delhi, the 27th June, 1997

G.S.R. 287.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Service Act, 1951 (61 of 1951), read with rule 11 of the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954, the Central Government in consultation with the Government of Rajasthan, hereby makes the following Rules, 1997, namely :—

1. (1) These rules may be called the Indian Administrative Service (Pay) Third Amendment Rules, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954 :—

(a) In Schedule-III-A posts carrying pay above the time-scale in the Indian Administrative Service under the State Government in the Table, for the entry, "Rajasthan" occurring in the first column and the corresponding entries in the second and third column, the following shall be substituted, namely :—

RAJASTHAN

Designation of posts	Pay Scale of pay
Chief Secretary to Government	Rs. 8000
Chairman, Board of Revenue	Rs. 8000
Chairman Rajasthan Civil Services Appellate Tribunal	Rs. 8000
Principal Secretary to Government	Rs. 7300-100-7600
Chairman, Rajasthan Tax Board	Rs. 7300-100-7600
Director, HCM State Institute of Public Administration	Rs. 7300-100-7600
Chief Electoral Officer-cum-ex-officio Principal Secretary to Government, Elections	Rs. 7300-100-7600
Secretary to Chief Minister	Rs. 7300-100-7600
Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Divisional Commissioners	Rs. 5900-200-6700
Commissioner for Departmental Enquiries	Rs. 5900-200-6700
Commissioner, Commercial Taxes	Commissioner, Commercial Taxes Rs. 5900-200-6700
Member, Board of Revenue	Member, Board of Revenue Rs. 5900-200-6700
Commissioner, Area Development	Commissioner, Area Development Rs. 5900-200-6700
Transport Commissioner	Transport Commissioner Rs. 5900-200-6700
Secretary to Governor	Secretary to Governor Rs. 5900-200-6700
(b) In "Schedule III-B posts carrying pay in the senior scale of the Indian Administrative Service under the State Government including posts carrying special pay in addition to pay in the time scale, in the Table, for the entry "Rajasthan" occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following shall be substituted, namely :—	(b) In "Schedule III-B posts carrying pay in the senior scale of the Indian Administrative Service under the State Government including posts carrying special pay in addition to pay in the time scale, in the Table, for the entry "Rajasthan" occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following shall be substituted, namely :—
Special Secretary to Government	Special Secretary to Government.
Deputy Secretary to Government	Deputy Secretary to Government.
Settlement Commissioner & Ex-officio Director of Consolidation	Settlement Commissioner & Ex-officio Director of Consolidation.
Director, Rural Development & Panchayati Raj, Registrar, Cooperative Societies	Director, Rural Development & Panchayati Raj, Registrar, Cooperative Societies.
Collectors	Collectors.
Director of Industries	Director of Industries.
Director, Watershed Development & Soil Conservation	Director, Watershed Development & Soil Conservation.
Director, Primary & Secondary Education	Director, Primary & Secondary Education.
Director, Employment	Director, Employment.
Director, Small Savings	Director, Small Savings.
Director, Sheep & Wool	Director, Sheep & Wool.
Director, Women and Child Development	Director, Women and Child Development.
Director, State Insurance & Provident Fund	Director, State Insurance & Provident Fund.
Labour Commissioner	Labour Commissioner.
Commissioner, Excise	Commissioner, Excise.
Commissioner Colonisation, Rajasthan Canal Project	Commissioner Colonisation, Rajasthan Canal Project.
Additional Collector (Development)	Additional Collector (Development).
Additional Commissioner, Commercial Taxes	Additional Commissioner, Commercial Taxes.
Addl. Registrar, Cooperative Societies	Addl. Registrar, Cooperative Societies.
Registrar, Board of Revenue	Registrar, Board of Revenue.
Addl. Commissioner, Food & Civil Supplies	Addl. Commissioner, Food & Civil Supplies.
Addl. Area Development Commissioner	Addl. Area Development Commissioner.
Director, Information & Public Relations	Director, Information & Public Relations.
Director of Tourism	Director of Tourism.
Director, Computer	Director, Computer.
Inspector General of Registration of Stamps	Inspector General of Registration of Stamps.

Secretary, Rajasthan Public Service
Commissioner.
Director, Social Welfare.

[No. 11031/2/94-AIS(II)-B]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

NOTE : The Principal Rules were published vide
Gazette No. 158 dated 14-9-1954.

Schedule III of the Principal Rules in
respect of Rajasthan were amended vide
GSR No. 979 dated 14-9-1974, 370
dated 22-3-1975, 73(E) dated 10-2-1976,
589(E) dated 23-8-1977, 629(E) dated
17-11-1979, 764(E) dated 18-12-1982,
767 dated 17-10-87, 493 dated 7-9-1991
and 239 dated 23-5-1992.

नागर विमानन मंत्रालय

नई दिल्ली, 20 जून, 1997

सा.क्र.नि. 288.—इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी (इंग्रीजी) के नियमों एवं विनियमों के नियम 9.1 के अधीन ब्रदत शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार एतद्वारा नागर विमानन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संगठन, इंग्रीजी के निदेशक के पद की भर्ती संबंधी विधि को विनियमित करने वाले निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :

1. लघु शीर्षक तथा प्रवर्तन :

(1) ये नियम निदेशक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी भर्ती नियम, 1947 कहलाएंगे।
(2) ये शासकीय राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. पद संख्या, वर्गीकरण तथा वेतनमान

उक्त पद की संख्या, इसके वर्गीकरण तथा उसके लिए सम्बद्ध वेतनमान के बारे में इन नियमों के लिए संलग्न अनुसूची के कालम 2 से कालम 4 तक में उल्लेख किया जाएगा।

3. भर्ती की विधि, आयु सीमा तथा अन्य अहंसाएं आदि :

उक्त पद के लिए भर्ती विधि, आयु सीमा, अहंता तथा इससे संबंधित अन्य मामले उक्त अनुसूची के कालम 5 से कालम 14 में उल्लेखानुसार होंगे।

4. अनहंता : ऐसा कोई अध्यर्थी उक्त पद के लिए नियुक्ति हेतु पात्र नहीं होगा जिसने, —

(क) ऐसे व्यक्ति/महिला से अनुबंधित विवाह किया हो जिसकी पत्नी/जिसका पति जीवित हो; अथवा
(ख) अपनी पत्नी/पति के जीवित रहते हुए किसी दूसरे व्यक्ति/महिला के साथ अनुबंधित विवाह किया हो,

व्यक्ति के केन्द्र सरकार इस नियम के संक्रिया से किसी व्यक्ति को छूट देती हो कि वह आपस्त है कि ऐसा विवाह ऐसे व्यक्ति और विवाह के दूसरे पक्ष के लिए प्रयोज्य वैयक्तिक कानून (पर्सनल लॉ) के अधीन स्वीकार्य है और ऐसा किए जाने के लिए दूसरे अन्य आधार भी है।

5. छूट देने की शक्ति : केन्द्र सरकार यदि अपने विवेक से यह समझती है कि ऐसा करना आवश्यक अथवा समीचीन है, यह आदेशानुसार तसंबंधी कारण को लिखित रूप में बर्ज करने हेतु तथा कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग से परामर्श करके कसी भी वर्ग अवयव व्यक्तियों के वर्ग के संबंध में इन नियमों के किन्हीं भी उपबंधों में छूट दे सकती है।

अनुसूची

पद का नाम	पद की संख्या	वर्गीकरण	वेतनमान	क्या ज्यन पद है अथवा अन्यथा पद
1	2	3	4	5
निदेशक	1	गैर प्रतिनिधित्वीय	7500-100-7600 रु.	ज्यन पद
			के अतिरिक्त अकादमी	
			के नियमों के अनुसार	
			उड़ान तथा अन्य भर्ती	

सीधी भर्ती के लिए आयु सीमा	भया केन्द्रीय सिविल सेवा (पंशन) नियम 1972 के नियम 30 के अधीन स्वीकार्य सेवा के जमा वर्षों का लाभ	सीधी भर्ती के लिए अपे- क्षित शैक्षिक तथा अन्य अर्हता	वरा सीधी भर्ती हेतु परिवीक्षा की अवधि, विहित आयु और यदि कोई हो शैक्षिक अर्हताएँ पदो- प्रति पासे वाले के मामले में लागू होंगी।
-------------------------------	---	--	---

6

7

8

9

10

45 तथा 55 वर्ष के बीच	लागू नहीं	अनिवार्य (1) चालू एपरलाइन्स परि- वहन पायलेट लाइसेंस धारक (2) कम से कम 3 वर्ष का विमान संबंधी अनुदेशात्मक अनुभव (3) विश्व की अद्यतन विमा- नन प्रोधोगिकी की जान- कारी (4) प्रशिक्षण संस्थान के संचालन और व्यावसायिक तथा सरकारी एजेंसियों के साथ सम्पर्क स्थापित करने में सक्षम होने के लिए प्रशासनिक और प्रबंधकीय अनुभव वांछनीय किसी मान्यता प्राप्त विश्व- विद्यालय से स्नातक	लागू नहीं	लागू नहीं
--------------------------	-----------	---	-----------	-----------

भर्ती का तरीका, सीधी भर्ती हारा या प्रोत्तिया तरीका परिवर्तन के अनुदेशक स्थानान्तरण द्वारा भर्ती के मामले में ये ये जिनसे प्रोत्तिया तरीका परिवर्तन के अनुदेशक स्थानान्तरण किया जाना है।

11

12

सीधी भर्ती या प्रोत्तिया परिवर्तन के अनुदेशक स्थानान्तरण (प्रशासनिक व्यवस्था सहित)

प्रोत्तिया

- (1) मुख्य अनुदेशक के रूप में कम से कम तीन वर्ष का अनुभव तथा अकादमी में उनका कैरियर अच्छा रहा हो।
- (2) बालम संख्या 8 के अधीन निलिखित शैक्षिक तथा अन्य अर्हताएँ प्राप्त हो।

प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण (प्रत्यावधि अनुबंध सहित)

- (1) भारतीय वायु सेना के अधिकारी जिनका रैक एयर कमोडोर तथा उससे उच्च हो; अथवा
- (2) केन्द्र सरकार/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपकरणों/अर्द्ध सरकारी स्वायत्त या गविधिक संगठनों के प्रधिकारी
- (क) (1) नियमित आधार पर सदृश पद; अथवा
- (2) 5900-6700 रुपए के वेतनमान अथवा समतुल्य वेतनमान के पदों पर तीन वर्ष की नियमित सेवा; तथा
- (ख) कालम संख्या 8 के अधीन यथा उल्लिखित शैक्षिक अर्हताएं तथा अनुभव प्राप्त हो।

प्रतिनियुक्ति आधार पर स्थानान्तरण (प्रत्यावधि अनुबंध सहित) द्वारा नियुक्त हेतु उच्च वायु सीमा आवेदनों की प्राप्ति की अंतिम तारीख को 55 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।

यदि विभागीय प्रोश्नति समिति विद्यमान है तो उसका गठन किस प्रकार है

जिन परिस्थितियों में संघ सोक मेवा आयोग से भर्ती करने के संबंध में परामर्श स्थित जाना है

समूह 'क' विभागीय प्रोश्नति समिति
(प्रोश्नति पर विचार करने हेतु)

1. सचिव, नागर विभाग (इग्रुआ की शासी परिषद के प्रध्यक्ष)
2. प्रबन्ध निवेशक एयर हंडिया
3. प्रबन्ध निवेशक, इंडियन एयर लाइन्स

प्रावश्यक नहीं क्योंकि इग्रुआ एक स्वायत्त संगठन है

—प्रध्यक्ष
—सदस्य
—सदस्य

[सं. ए बी-28060/004/97-बी१]

सुरेन्द्र कुमार सिंघल, अवर सचिव

MINISTRY OF CIVIL AVIATION

New Delhi, the 20th June, 1997

G.S.R. 288.—In exercise of the powers conferred under Rule 9.1 of the Rules and Regulations of Indira Gandhi Rashtriya Uran Akademi (IGRUA), the Central Government hereby makes the following rules regulating the method of recruitment to the post of Director, IGRUA, an autonomous organisation under the Ministry of Civil Aviation, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called Director, Indira Gandhi Rashtriya Uran Akademi Recruitment Rules, 1997.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
2. Number of post, classification and scale of pay.—The number of the said post, its classification and the scale of pay attached thereto shall be as specified in columns 2 to 4 of the Schedule annexed to these rules.
3. Method of recruitment, age limit and other qualifications, etc.—The method of recruitment to the said post, age limit, 1613 GL/97—3

qualification and other matters relating thereto shall be as specified in columns 5 to 14 of the said Schedule.

4. Disqualification.—No person,—

- (a) Who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living; or
- (b) Who, having a spouse living, has entered into or contracted a marriage with any person,

shall be eligible for appointment to the said post :

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and that there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

5. Power to relaxation.—Where the Central Government is of the opinion that it is necessary or expedient so to do, it may by order, for reasons to be recorded in writing and in consultation with Department of Personnel & Training, relax any of the provisions of these rules with respect to any class or category of persons.

SCHEDULE

Name of Post	No. of Post	Classification	Scale of pay	Whether Selection post or Non-Selection Post
1	2	3	4	5
Director	1	Non-Ministerial	Rs. 7300-100-7600 plus Flying and other Allowances as per Rules of the Akademi	Selection
Age limit for direct recruits	Whether benefit of added years of service admissible under rule 30 of Central Civil Service (Pension) Rules, 1972	Educational and other qualifications required for direct recruits	Whether age and educational qualifications prescribed for direct recruits will apply in case of promotees	Period of Probation if any
6	7	8	9	10
Between 45 and 55 years.	Not applicable.	<p>Essential :</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) Holder of current Airlines Transport Pilot's Licence. (ii) Instructional experience on aircraft for atleast 3 years. (iii) Knowledge of latest aviation technology around the world. (iv) Administrative or managerial experience to be able to run a training institute and liaise with the professional and Government agencies. <p>Desirable :</p> <p>Graduate from a recognised University.</p>	Not applicable.	Not applicable
Method of Recruitment whether by direct recruitment or by promotion or by deputation/transfer and percentage of the vacancies to be filled by various methods	In case of recruitment by Promotion/Deputation/Transfer grades from which Promotion/Deputation/Transfer to be made			
11	12			
Direct recruitment or promotion or transfer on deputation (including short-term contract).	<p>Promotion :</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) Atleast three years experience as Chief Instructor and having good career record in the Akademi. (ii) Possessing educational and other qualifications as under column No. (8) <p>Transfer on Deputation (including Short term contract) :</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) Officers of Indian Air Force holding the rank of Air Commodore and above; or (ii) Officers of the Central Government/State Governments/Public Sector Undertakings/Semi-Governments/Autonomous or Statutory Organisations : <p>(a) (i) Holding Analogous post on regular basis or</p> <ul style="list-style-type: none"> (ii) With 3 years regular service in posts in the pay scale of Rs. 5900-6700 or equivalent, and <p>(b) Possessing the educational qualifications and experience as indicated under column No. 8.</p> <p>The upper age limit for appointment by transfer on deputation basis (including short-term contract) should not exceed 55 years on the closing date of receipt of applications.</p>			

If a Departmental Promotion Committee exists what is composition

Circumstances in which Union Public Service Commission is to be consulted in making recruitment

13

Group 'A' Departmental Promotion Committee
(for considering promotion)

1. Secretary, Civil Aviation (Chairman of the Governing Council of IGRUA)
—Chairman.
2. Managing Director, Air India—Member
3. Managing Director, Indian Airlines—Member.

14

Not necessary as IGRUA is an autonomous organisation

[No. AV. 2856/004/97-VE]
S. K. SINGHAL, Under Secy.

जन भूतल परिवहन मंत्रालय
(पोत परिवहन खण्ड)
नई दिल्ली, 19 जून, 1997

सा. का. नि. 289.—बाणिज्य पोत परिवहन नो-परिवहन की सुरक्षा नियम 1996 का प्रारूप, बाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम 1958 (1958 का 44) की धारा 458 के साथ पठित धारा 356 द्वारा यथा अपेक्षित और बाणिज्य पोत परिवहन संकट संदेश और नौपरिवहन संबंधी चेतावनी) नियम 1964 को अधिकांत करते हुए भारत सरकार की अधिसूचना सा. का. नि. 202 तारीख 26-4-96 द्वारा भारत के राजनव भाग 2, खण्ड 3, उपखण्ड (1) तारीख 11-5-96 में उन सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिए प्रकाशित किया गया था जिनके उससे प्रभावित होने की सम्भावना है। उक्त प्रारूप नियमों के संबंध में उस तारीख से जिसको भारत के राजनव में प्रकाशित अधिसूचना की प्रतियां जनता को उपलब्ध कराई गई थी, से 45 दिन की अवधि के भीतर आक्षेप या सुशाव आमंत्रित किए गए थे।

उक्त राजपत्र जनता को 11-5-96 को उपलब्ध करा दिया गया था;

कोई आक्षेप या सुशाव प्राप्त नहीं हुए हैं;

अतः अब केन्द्रीय सरकार बाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम 1958 (1958 का 44) की धारा 458 के साथ पठित धारा 356 द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अन्तर्तः—

1 संक्षिप्त नाम प्रारम्भ और लागू होना:—

(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम बाणिज्य पोत परिवहन (नौपरिवहन की सुरक्षा) नियम, 1997 है।

(2) इन नियमों में जैसा अन्यथा उपवंशित है उनके सिवाय नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से लागू होंगे।

(3) ये नियम सभी समुद्रगमी भारतीय पोत और भारतीय पोत से भिन्न ऐसे पोत जो भारत के राज्य क्षेत्रीय सागर खण्ड में हो पर लागू होंगे:

परन्तु ये नियम निम्नलिखित पर लागू नहीं होंगे :—

- (i) यांत्रिक साधनों द्वारा न चलाएं जाने वाले पोत;
- (ii) अधिनियम के भाग के अधीन रजिस्ट्रीकृत चलते पोत;
- (iii) अधिनियम के भाग XV के अधीन रजिस्ट्रीकृत मत्स्य जलयान;
- (iv) कीड़ा नौकाएं;
- (v) ऐसी पोत जो व्यापार अथवा ऐसी संक्रियाओं में लगी हों जहां विशेष नौपरिवहन और कार्यपालन संबंधी आपेक्षाओं के लिए तथा पोत परिवहन महानिदेशक द्वारा यथा अनुमोदित से तु और नौपरिवहन संबंधी उपकरणों की व्यवस्था की गई हो।

2. परिभाषाएँ:—

इन नियमों में जैसे तरु सन्दर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो;

(क) "अधिनियम" से बाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम 1958 (1958 का 44) अनिवार्य है;

(ख) "अनुमोदित" से पोत परिवहन महानिदेशक द्वारा अनुमोदित अनिवार्य है;

(ग) "स्वचालित रडार आलेखन सहाध्य" (ए और फी ए) से वह राडर अनिवार्य है जिसमें लक्षणों की प्राप्ति तथा आलेखन के लिए और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों का अनुपालन करने के लिए स्वचालित साधनों की व्यवस्था हो।

(घ) "से" से अनिवार्य उक्त शब्द से है जिसमें नौपरिवहन और पोत का नियंत्रण किया जाता है और इसमें हाउस चार्ट कक्ष तथा सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों के अनुपालन करने से संबंधित से तु खण्ड भी सम्मिलित है।

(ङ) "टक्कर विनियमों" से अनिवार्य है बाणिज्य पोत परिवहन (समृद्धि में टक्करों का निवारण) विनियम 1975;

(च) पोत के संबंध में "निर्मित" से अभिप्रेत है निर्माण की वह अवस्था जहाँ:—

(i) कीन लगा दिया गया है; अथवा

(ii) किसी विशिष्ट पोत के संबंध में पहुँचने जाने योग्य सनिर्माण आवश्यक हो गया है; या

(iii) उप पोत का समुच्चय प्राप्त कर दिया गया है जिसमें कम से कम 50 टन अथवा सभी संरचनात्मक सामग्री के अनुमानित परिमाण का 1% भी कम हो, संगठन हो।

(छ) "प्रतिवृत्ति गृहीता गारी युक्ति" से अभिप्रेत है जब की भर्हाई भावने में और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय संगठन मानकों की प्राक्षांशिक यनुपालन करने के लिए प्रयुक्त उपकरण।

(ज) "आभारी स्टीरिंग स्थिति" से अभिप्रेत है, पोत पर वह स्थिति जहाँ से नीपरिवहन और स्टीरिंग गिरर उपबृष्ट के बीच स्टीरिंग गिरर के प्रवालन के लिए प्रयुक्त प्रेषण प्रणाली के खराब हो जाने की स्थिति में जलयान को स्टीयर किया जा सकता है।

(झ) "धूर्णक्ष स्थायीदिक्षुचक" से अभिप्रेत है विशा बताने वाले वह उपकरण जिसमें धूर्णक्ष स्थायी के सिद्धान्त का उपयोग किया जाता है और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की श्रेष्ठांशों का अनुपालन किया जाता है।

(ञ) "अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों" से अभिप्रेत है अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन की सभी द्वारा अनुमोदित और प्रकाशित तथा समयन्तराल पर यथा मंशोधित सिफारिश, मार्ग निर्देश अथवा मानक।

(ट) "अन्तर्राष्ट्रीय संकेत कोड" से अभिप्रेत है सुरक्षा, आपाती और संकट संदेशों के प्रेषण के लिए प्रयुक्त और अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा अनुमोदित संकेत कोड।

(ठ) "चुम्बकीय दिक्षुचक" से अभिप्रेत है वह उपकरण जो सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की अनेकांश पूरी करता हो।

(ड) "वाणिज्य पोत खोज और बचाव नियम पुस्तक" से अभिप्रेत है समुद्र में पोतों की खोज और बचाव संकियां आंशिक रूप से अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा प्रकाशित नियम पुस्तक।

(इ) "मीन" से अभिप्रेत है। 853, 144 मीटर के एक नौ समुद्री मील।

(ण) "नायिकों के लिए गुणांशों" से अभिप्रेत है भारत मरकार के नुस्खे जल संरक्षक द्वारा प्रकाशित सूचनाएं। इसमें नौसेना क्षेत्र संबंधी चेतावनियां और वार्षिक सूचनाएं भी सम्मिलित हैं।

(त) "रक्षार संसाधन" से अभिप्रेत है ऐसा संस्थान 'जो ट्राफरों ने उनके बचाव तथा नीपरिवहन और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन भावकों का अनुपालन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

(थ) "रेडियो दिशा खांजा साधित" से अभिप्रेत है आने वाले किसी रेडियो नंकेत की दिशा की खोज करने और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की श्रेष्ठांशों का अनुपालन करने वाले उपकरण।

(द) "रेडियो विनियम" से अभिप्रेत है अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार सम्मेलन 1982 से सम्बद्ध रेडियो विनियम।

(ध) "धूमाव सूचक की दर" से अभिप्रेत है वह उपस्कर जो उस दर को दर्शित करता है जिस पर पोत धूमता है और जो सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की श्रेष्ठांशों को पूरी करता है।

(न) "मार्ग-निर्धारण प्रणाली" से अभिप्रेत है एक अथवा एक गे अधिक मार्ग या मार्ग-निर्धारण उपायों की प्रणाली जिसका उद्देश्य ट्रक्करों और उनके भूभूष्ट हो जाने के जोखिम को कम करता। इसमें यातायात पृथक्करण स्कीम, द्विमार्गीय, सिफारिश किए गए पथ, बचाए जाने वाले क्षेत्र तटकर्त्ता यातायात क्षेत्र, चक्करदार मार्ग, ऐहतियाती क्षेत्र और अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा स्थापित गहरे जलमार्ग सम्मिलित है।

(प) "अनुसूची" से अभिप्रेत है इन नियमों की अनुसूची।

(फ) "गति और दूरी सूचक" से अभिप्रेत है वह उपस्कर जो जलयान की गति और समुद्र में पोत द्वारा तय की गई दूरी को बताता और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के मानकों की अवैधांशिक पूरा करता है।

भाग 1

नीपरिवहन और सुरक्षासंबंधी संसूचना

3 संसूचना:—

(१) सभी नीपरिवहन और सुरक्षा संबंधी संसूचना निम्नलिखित में से किसी एक अथवा एक से अधिक विधियों का उपयोग करके किये जाएंगे।

(क) जब रेडियो टेलीग्राफी अथवा अंकीय चयनात्मक आवाहक सुविधा सहित अथवा रहित रेडियो टेलीफोनों अथवा संकीर्ण बैड प्रत्यक्ष मुद्रण प्रणाली का उपयोग किया जा रहा हो तो रेडियो विनियमों में विनिश्चिट प्रक्रिया अथवा जब उपग्रह आधारित प्रणाली का उपयोग किया जा रहा हो तो अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री उपग्रह संगठन द्वारा विनिश्चिट प्रक्रिया।

(ख) जब भाषा संबंधी कठिनाई अनुभव की जा रही हो तो अन्तर्राष्ट्रीय संकेत कोड में विहित झोड़।

(ग) जब अंग्रेजी भाषा में टेलीफोन द्वारा संसूचित किया जा रहा हो तो मानक समुद्री नीपरिवहन शब्दावली।

(2) नौपरिवहन और सुरक्षा संबंधी संचाना के प्रयोजनार्थ वाणिज्य पोत परिवहन (रेडियो) नियम, 1983 की अपेक्षाओं के प्रतिरित 150 टन सकल टनभार वाले और इसमें अधिक टनभार वाले प्रत्येक पोत में निम्नलिखित होना चाहिए:—

- (क) अन्तर्राष्ट्रीय कोड पताकाओं का एक सेट,
- (ख) अन्तर्राष्ट्रीय कोड संकेत,
- (ग) मानक समुद्री नौपरिवहन शब्दावली से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के प्रकाशन।
- (घ) सुंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन यानकों की अोक्षाओं को पूरा करने वाला संकेत लैम्प।
- (इ) टक्कर विनियमों के उपावन्ध में विनिर्दिष्ट संकट संकेतों को संसूचित करने के साधन।
- (ज) जब भी किसी संसूचना में कोई तारीख व समय उपदर्शित किया जाना हो, वह सर्वव्यापी भवन्वित समय (यू.टी.सी०) में उपदर्शित किया जाएगा।

4. संकट संदेश:—

(1) जब भी किसी जहाज का मास्टर इस नियम पर पहुंच जाए कि उसका जहाज ऐसे सशिकट संकट में है, जिसके कारण जहाज या किसी व्यक्ति के जीवन की हानि हो सकती है तो वह अपनी संचार प्रणाली की पहुंच के भीतर सभी पोतों और तटीय केन्द्रों को सख्त भाषा में (अधिमानतः अंग्रेजी में) संकट संदेश भेजेगा।

(2) ऐसे संदेश से पूर्व “संकट” उपर्याप्त करने वाला समुचित संकेत जोड़ कर संदेश भेजा जाएगा और रेडियो विनियमों में विहित प्रक्रियाओं के उपयोग से उसे प्रेपित किया जाएगा।

(3) ऐसे संदेश भेजते समय इसमें कम से कम निम्नलिखित सूचनाएँ अवश्य सम्मिलित की जाएँगी:—

- (क) तारीख एवं समय जब संकेत दिया गया।
- (ख) पोत की अवस्थित;
- (ग) संकट उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ, और
- (घ) यदि पोत का त्याग करना है तो बचाव नीकाओं की प्राप्तता तथा भौमिका की विद्यमान दशाएँ।

(4) प्रत्येक पोत का मास्टर जो पोत का ल्याग करने का आदेश देता है, वाणिज्यिक पोत परिवहन (रेडियो) नियम 1983 के अन्तर्गत उपर्याप्त स्वचालित की गई युक्ति तथा वाणिज्यिक पोत परिवहन (प्राण रक्षक साधित) नियम, 1991 की अपेक्षाओं के अनुसार आपातकालीन स्थिति उपर्याप्त करने वाले रेडियो बीकल को संक्रिय करने का भी आदेश देगा।

5. अत्यावश्यक संदेश:—

(1) जब भी किसी पोत के मास्टर के पास यह विश्वास करने के लिए कारण है कि उसका पोत या पोत

पर के किसी व्यक्ति का जीवन संकट में है और तट केन्द्रों तथा अन्य पोतों को सतर्क करने की आवश्यकता है, परन्तु संकट होना अधिक नहीं है कि जहाज का त्याग या किसी प्रकार की तत्काल आवश्यकता अपेक्षित होता है। वह एक “आत्यावश्यकता संदेश” भेजेगा। इस प्रकार का संकेत, जहां भी व्यवहार्य हो, किसी विशिष्ट तट रेडियो फेन्डर या किसी ज्ञात निकटवर्ती पोत को प्रेपित किया जाएगा। इस प्रकार के संकेत का तब भी प्रयोग किया जा सकता है, जब किसी पोत का मास्टर यह चेतावनी देता है कि पारस्परियताएँ ऐसी हैं कि उसके लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह कुछ समय पश्चात् संकट संदेश भेजे। तथापि, ऐसे मामलों में, संकेत किसी विशिष्ट केन्द्र की संबोधित करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु परिरिक्षितियों को स्पष्ट रूप से उपर्याप्त किया जाना चाहिए।

(2) इस प्रकार के संदेश से पूर्व “अत्यावश्यकता” उपर्याप्त करने वाला समुचित कोड जोड़ जाना चाहिए और रेडियो विनियमों ने विहित प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए, उनका प्रसारण किया जाना चाहिए।

(3) इस प्रकार के संदेश भेजते समय उनमें कम से कम निम्नलिखित सूचना अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए:—

- (1) समय, तारीख तथा पोत की अवस्थित;
- (2) पोत काजल-मार्ग, गति एवं मूल गतिशील स्थान;
- (3) यथाव्यवहार्य व्यांगों सहित पोत पर उत्पन्न समस्या की प्रकृति;
- (4) क्या किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि हाँ, तो इस प्रकार की सहायता की प्रकृति;
- (5) क्या पोत की किसी निकटवर्ती पत्तन की ओर भोड़ दिया गया है और यदि हाँ, तो बन्दरगाह का नाम और बन्दरगाह पर पहुंचने की संभावित तारीख तथा समय, और
- (6) इस प्रकार की प्रतिकूल स्थिति को नियंत्रित करने के लिए किसी भी प्रयास तथा ऐसे प्रयासों के परिणामों का व्यौरा;

(4) उपर्याप्त (1) के अनुपालन में संदेश भेजने के पश्चात् यदि व्यवहार्य हो, तो पोत का मास्टर प्रत्येक घटे के पश्चात् पुनः संदेश भेजेगा परन्तु किसी भी दशा में यह अन्तराल तीन घटे से अधिक नहीं होगा। इस प्रकार के संदेशों में कम से कम निम्नलिखित सूचना होगी:—

- (1) समय, तारीख तथा जहाज की स्थिति;
- (2) जहाज का जलमार्ग तथा गति;
- (3) जहाज पर स्थिति में परिवर्तन, यदि कोई हो;

(5) यदि किसी पोत का मास्टर जिसने उप-नियम

(1) के अनुपालन में कोई संदेश भेज दिया है इस नियम पर पहुंचता है कि पोत या पोत कि किसी भी अधिक्त के जीवन को अब कोई खतरा नहीं है अथवा एहतियाती कारंवाई करने की आवश्यकता नहीं है अथवा यदि पोत पत्न या पहुंच गया है, तो वह तट रेडियो केन्द्र तथा उस क्षेत्र में स्थिति पोतों को तुरन्त उस “अत्यावश्यकता” संदेश को निरस्त करने का संवेदन भेजेगा।

6. सुरक्षा संबंधी संदेश:—

(1) जब किसी पोत के मास्टर को नीचे दी गई परिस्थितियों का सामना करना पड़ जाए:—

(1) बर्फ़;

(2) त्यक्त पोत;

(3) तूफान या उष्णकटिबन्धीय परिकामी तूफान या मध्याकांड दाव,

(4) 68 कि. मी./प्रति घटा या अधिक की गति से चलने वाली हवाओं के साथ उपशीतक वायु तापमान जिसके कारण जहाज के ढांचे पर बर्फ़ जमा हो जाए।

(5) 95 कि. मी./प्रति घटा या अधिक की गति से चलने वाली हवाएं जिनके संबंध में तूफान की कोई चेतावनी प्राप्त नहीं हुए, या

(6) नौपरिवहन को पहुंचने वाला कोई अन्य प्रत्यक्ष खतरा तो वह उसके पास उपलब्ध सभी संभव साधनों से निकटवर्ती पोतों तथा निकटम तट रेडियो केन्द्र को जिससे वह सम्प्रेषण स्थापित कर सकता है “सुरक्षा” संदेश इस अनुरोध के साथ भेजेगा कि उसे समुचित प्राधिकारी को पुनः प्रसारित कर दिया जाए।

(2) ऐसे संदेश से पहले “सुरक्षा” उपविश्वास करने वाला समुचित कोड जोड़ कर उसे अंग्रेजी में सरल भाषा में या अन्तर्राष्ट्रीय संकेत कोड के माध्यम से अथवा रेडियो विनियमों में विहित प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हुए मौतम विज्ञान संबंधी मौतम कोड द्वारा प्रसारित किया जाना चाहिए।

(3) जब इस प्रकार के संदेश भेजे जाएं तो उनमें कम-से-कम निम्नलिखित सूचना सम्मिलित की जाएगी—

(क) बर्फ़ त्यक्त पोत या नौपरिवहन को किसी अन्य प्रत्यक्ष खतरे के मामले में:—

(1) देखी गई बर्फ़ त्यक्त पोत या खतरे का प्रकार

(2) खतरे की अद्यतन स्थिति

(3) अद्यतन देखे गए खतरे का समय तथा तारीख, और

(4) बहाव की गति व दिशा, यदि कोई हो,

(घ) उण कटिबन्धीय परिकामी तूफान या मध्याकांड दाव के मामले में:—

(1) एक विवरण जिसमें यह बताया गया हो कि पोत तूफान या दाव से जूझ चुका है अथवा पोत के निकटवर्ती क्षेत्र में तूफान या शास उत्पन्न हो रहा है अथवा तूफान या दाव मौजूद है—

(2) देखे जाने के समय पोत की अवस्थिति, समय तथा तारीख,

(3) हैंक्सोमास्कल (एच पी ए) में संशोधित किया गया वायुदावामापीय दाव।

(4) पिछले 3 घंटों के दौरान वायुदाव प्रवृत्ति।

(5) हवा की सही दिशा तथा ये ग।

(6) समुद्र की स्थिति (अत्यल्प तंरगित शान्त प्रकृत्या या खुला सागर)।

(7) महा तरंग की ऊंचाई (हल्की मध्यम ऊंची) जहां से वे खहरे आ रही हैं, उनकी सही दिशा, अवधि एवं लम्बाई (छोटी औसत, लम्बी)।

(8) पोत का वास्तविक जल मार्ग तथा गति

(9) पिछले 3 घंटों के दौरान वर्षा का स्वरूप तथा सघनता (हल्की रुक-हक कर होने वाली अनवरत) और दृश्यता (अच्छी, मध्यम, खराब)।

(10) आकाश में छाए हुए बादालों का स्वरूप तथा विस्तार (नीलाआकाश अंशतः मेघाभिदित पूर्णतः बादलों से घिरा हुआ) और

(11) हवा तथा समुद्र का तापमान।

(ग) 95 कि. मी. प्रति घटा या अधिक गति से चलने वाली हवाओं के मामले में, जिसके लिए तूफान संबंधी कोई चेतावनी प्राप्त नहीं हुई है। संदेश में इस उप-नियम के खण्ड (ख) में दी गई के समरूप सूचना होगी।

(घ) 68 कि. मी. प्रति घटा या अधिक की गति से चलने वाली हवाओं के साथ उपशीतक वायु तापमान जिसके कारण पोत के ढांचे पर बर्फ़ जमा हो जाए:—

(i) देखे जाने के समय पोत की अवस्थिति, तारीख तथा समय

(ii) हवा तथा समुद्र का तापमान, और

(iii) हवा का वेग तथा दिशा।

(4) जब भी किसी पोत का मास्टर उपनियम (3) के यथास्थिति खण्ड (ख) या खण्ड (ग) का अनुपालन करते हुए सुरक्षा संबंधी संदेश भेजता है तो वह और प्रेषण करके उस संदेश को यदि संभव हो तो प्रत्यक्ष घंटे बाद प्रसारित करेगा। जब तक कि उसका पोत तूफान या वाव से प्रभावित रहे वह किसी भी स्थिति में इस प्रकार के प्रेषण की रिपोर्ट करने में तीन घंटे से अधिक की समयावधि का अन्तराल नहीं रखेगा।

(5) किसी भी पोत के मास्टर को इस नियम के अनुसार प्रसारित संदेश प्राप्त होने पर अत्यधिक सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए तथा जब भी आवश्यक हो जब भार्ग या पोत की गति में परिवर्तन कर देना चाहिए, जिससे कि रिपोर्ट किए गए संकट से बचा कर नौपरिवहन किया जा सके। बर्फ जमने की सूचना दी जाए तो कल्पान हूलकी गति से आगे बढ़ेगा तथा बर्फ की मौजूदगी का पता लगाने के लिए सभी संभव साधारणों का उपयोग करेगा और सावधानीरूप नौपरिवहन करेगा।

7. "संकट" या "अत्यावश्यकता" संदेश प्राप्त होने पर की जाने वाली कार्रवाई:

(1) नियम 4 या 5 के अनुसार प्रसारित संदेश प्राप्त होने पर पोत का मास्टर, स्वयं के जहाज की स्थिति, जल-मार्ग, गति तथा गतव्य स्थान पर का व्यौरा देने हुए संदेश प्राप्त होने की तुरन्त पुष्टि करेगा।

(2) जहां संदेश देने वाले पोत द्वारा सहायता की संभाव्य अपेक्षा का संकेत दिया गया हो, संदेश प्राप्तकर्ता पोत के मास्टर द्वारा अधिनियम की घारा 355 अथवा 355-के उपबन्धों के अधीन इस बात का संकेत दिया जायेगा कि क्या वह ऐसी सहायता प्रदान करने की स्थिति में है और उसके पास इस प्रयोजन के लिये क्या सुविधायें उपलब्ध हैं।

(3) उपनियम (1) और (2) में विविध किये गये अनुसार सूचना संसूचित करने के पश्चात् संदेश प्राप्तकर्ता पोत का मास्टर इस बात का प्रबन्ध करेगा कि पारस्परिक सहमति से तय किये गये समय अन्तरालों पर संदेश प्राप्त किये जायें।

(4) जहां "अत्यावश्यकता" संदेश अथवा अत्यावश्यकता संदेश के उपरान्त उसे अद्यतन बनाने के लिये प्राप्त किसी संदेश के पश्चात् प्राप्तकर्ता पोत के मास्टर द्वारा और कोई संदेश प्राप्त नहीं किया जाता और उसके पास यह विश्वास करने का कागण हो कि संदेश देने वाले पोत में स्थिति त्रिगुण गई है तो वह सबसे नजदीकी बचाव समन्वयन केन्द्र अथवा समुद्र टट रेडियो रेटेशन को सभी उपलब्ध सूचनायें देते हुए उपयुक्त संदेश भेजेगा और ऐसे केंद्र एवं रेडियो स्टेशन द्वारा दी गई मालाहूर में मार्गदर्शित होंगा।

8. प्रत्येक पोत द्वारा, अधिनियम की घरा 214 के अन्तर्गत सरकारी लाग थुक में की जाने वाली प्रविष्टियों के अलावा निम्नलिखित प्रविष्टियां भी की जायेंगी :—

(क) पोत द्वारा भेजे गये प्रत्येक सुरक्षा, अत्यावश्यक अथवा संकट संदेश एवं परिस्थितियां जिनके कारण उक्त संदेश भेजने पड़ें;

(ख) पोत द्वारा प्राप्त की प्रत्येक अत्यावश्यकता अथवा संकट संदेश एवं उस पर की गई कार्रवाई;

(ग) नियम 11 के उपनियम (3) के उपबन्ध के अधीन सूचित की गई प्रत्येक घटना।

9. खोज एवं बचाव कार्य :—

अधिनियम की घरा 355 के अनुपालन में संकट में पड़े किसी जनयात अथवा वायुयान की महायता के लिये जब खोज एवं बचाव कार्य दिया जाना अपेक्षित हो तो प्रत्येक पोत द्वारा, वाणिज्यिक पोत खोज एवं बचाव नियम पुस्तक के उपबन्धों एवं संबंधित बचाव समन्वयन केन्द्र द्वारा दिये गये अनुदेशों के अनुसार कार्य किया जायेगा।

10. वाणिज्यिक पोत रिपोर्टिंग प्रणाली :—

(1) बंगाल की खाड़ी, अरवासागर और हिन्द महासागर में 300 इक्किंज के उत्तर में के सभी भारतीय पोतों द्वारा, नाविकों को दिये गये वार्षिक नोटिस में वर्णित के अनुसार दिन में एक बार अपनी स्थिति के बारे में भारतीय पोत स्थिति एवं सूचना रिपोर्टिंग तंत्र (इंडियन शिप पोजीशन एण्ड इनकार्डेशन रिपोर्टिंग सिस्टम) इन्सपायरर्स को सूचना दी जायेगी।

(2) इस नियम के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट त्रिवट में बाहर, एक पत्तन से दूसरे पत्तन के लिये समुद्री यात्रा पर जाने वाले प्रत्येक भारतीय पोत द्वारा अपनी स्थिति के बारे में दिन में एक बार, अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री खोज एवं बचाव अभियान (कर्वेशन) 1969 के उपबन्धों के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों के लिये स्थापित पोत रिपोर्टिंग तंत्र (शिप रिपोर्टिंग प्रणाली) को सूचना दी जायेगी। ऐसी क्षेत्रों में में जहां ऐसा कोई तंत्र उपलब्ध नहीं है, प्रत्येक भारतीय पोत द्वारा यथासंभव अपनी स्थिति के बारे में सूचना इन्सपायरर्स अथवा स्वामियों को दी जायेगी।

(3) प्रत्येक पोत, समुद्र में कोई हानिकारक पदार्थ या समुद्र में प्रदूषण विवारण पर अन्तर्राष्ट्रीय अभियान 1973 अथवा इसके 1978 के प्रोटोकॉल के उल्लंघन में किसी पोत को हानिकारक पदार्थ छोड़ने हुए देखने पर इसकी रिपोर्ट करेगा। ऐसी रिपोर्ट इन्सपायरर्स में विनिर्दिष्ट रूपविधान में दी जायेगी एवं इसका संप्रेषण निकटतम ममद्रटट रेडियो स्टेशन अथवा बचाव समन्वयन केन्द्र को किया जायेगा।

11. पथ-निर्धारण प्रणाली:—

(1) प्रत्येक पोत द्वारा जहाँ कही भी पथ निर्धारण प्रणाली स्थापित हो उसका अनुसरण किया जायेगा।

(2) यदि पोत का मास्टर अपने नियंत्रण के बाहर की, परिस्थितियों के कारण पूरी तरह में पथ निर्धारण प्रणाली द्वारा निर्देशित रूप में, पोत चलाने में असमर्थ हो तो स्थिति को उपदर्शित करने के लिये, "सुरक्षा" संदेश देने के साथ-साथ उस क्षेत्र में नीपरिवहन करने वाले सभी पोतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये प्रत्येक पूर्वविधानी वर्ती जायेगी। ऐसी प्रत्येक घटना को सरकारी लाग तक में दर्ज किया जायेगा एवं इसकी सच्चाना यथा शीघ्र प्रधान अधिकारी को दी जायेगी।

(3) समुचित प्राधिकारी अथवा पतन राज्य द्वारा रिपोर्ट की गई पथ निर्धारण प्रणाली के प्रत्येक अतिक्रमण की आहे इसकी रिपोर्ट मास्टर द्वारा की गई हो अथवा नहीं, प्रधान अधिकारी द्वारा जांच-पड़ताल, यदि कोई हो तो को भी ध्यान में रखेगा। ऐसी प्रत्येक जांच-पड़ताल की रिपोर्ट महानिदेशक को प्रस्तुत की जायेगी।

भाग—2

पहरी संगठन

12. साधारण:—

जब तक अन्त्या विनिर्दिष्ट न किया गया हो यह भाग अधिनियम के भाग 5 के अन्तर्गत रजिस्ट्रीकृत सभी समूद्र-गामी पोतों को लाग होगा।

13. पुल डिजाइन:—

(1) प्रत्येक पोत में एक सेनु अवस्था की जाएगी।

(2) पोत को पहली बार भारतीय रजिस्ट्री के अन्तर्गत रजिस्ट्रीकृत करते समय सेनु के अभिन्यास का निरीक्षण और अनुमोदन किया जायगा। इन नियमों के प्रवृत्त होने के समय यदि कोई पोत पहले से ही भारतीय पोत के रूप से रजिस्ट्रीकृत हो तो उसका निरीक्षण किया जायेगा और यथासंभव इन नियमों का अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। ऐसे पोत में संरचनात्मक परिवर्तन करने के लिए तभी कहा जायेगा जब इससे नीपरिवहन सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो।

14. पोतों पर कार्मिकों की तैनाती:—

(1) प्रत्येक पोत में, अधिनियम की धारा 70 के अधीन यथा अवैधित प्रमाण पवित्र अधिकारी होंगे।

(2) प्रत्येक पोत को प्रथम अनुसूची में विहित प्ररूप में एक कार्मिक तैनाती प्रमाणपत्र जारी किया जायेगा। ऐसा प्रत्येक प्रमाण-पत्र अधिकारम 5 वां की शर्ति के लिए दिवितार होगा।

15. नौपरिवहन पहरा:—

(1) समूद्र में सदैव ग्राहित नौपरिवहन के लिए पहरा रखा जायेगा।

(2) पहरे की संरचना ऐसी होगी जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रहरी कार्मिक सभी मंजूब आपात स्थितियों से निपट सकेंगे। किसी भी स्थिति में सदैव सेनु पर एक कांगड़ार और एक प्रहरी अधिकारी मौजूद रहेगा। पहरा देने समय, नीपरिवहन प्रहरी अधिकारी सुसंगत आई, एम.ओ. मानक में यथा विनिर्दिष्ट नीपरिवहन पहरे में पालन किए जाने वाले मूल निर्दात का पालन करेंगे।

16. इंजन कथ पहरा:—

(1) समूद्र में सदैव इंजीनियरी संबंधी सुरक्षा पहरा रखा जायेगा।

(2) पहरे की संरचना ऐसी होगी जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रहरी कार्मिक सभी मंजूब आपात स्थितियों में निपट सकते हैं। प्रहरी इंजीनियर सुसंगत "आई.एम.ओ." मानक में यथा विनिर्दिष्ट इंजीनियरी पहरे में पालन किये जाने वाले मूल निर्दात का पालन करेंगे।

17. युक्ति चालन धमता:—

प्रत्येक पोत को उसकी युक्ति पालन चालन क्षमता के संबंध में सूचना प्रदान की जायगी। विशेषतया निम्न-निर्धित सच्चाना पुल पर स्पष्ट रूप से दर्शित की जायगी:—

(क) इंजनों का प्रकार और नियंत्रण का तरीका (अत्रित सेनु नियंत्रण तार इत्यादि)।

(ख) एक सारणी जिसमें पाली में इसकी गति एवं नोदक के प्रति मिनट परिक्रमण के बीच का संबंध दर्शाया गया हो।

(ग) इंजनों का प्रति मिनट परिक्रमण जिस पर मंद आधी एवं पूर्ण परम्परागत इंजन गतियों पर आगे एवं पीछे हमें तिर्यारित किया गया हो।

(घ) व्यारों सहित वर्तन चक्र दर्शाने वाला एक रेखाचित्र।

(ङ) पूर्ण रूप में सदा हुया एवं स्थिरिक भाव में होने की स्थिति में इनके की अनुपानित दूरी तथा पूर्ण एवं आधी गति पर इसमें लिया गया समय।

(च) सहसा रोकने संबंधी परीक्षणों का व्योरा।

(छ) रडार ओवर को दो मीटरों की सहायता में हाई ओवर के एक तरफ और केवल एम.मीटर से हाई ओवर के दूसरी तरफ रखने में लगने वाला समय।

18 नाविक प्रकाशन :—

(1) प्रत्येक पोत में, आशयित समुद्री यात्रा के लिए, तटीय नौपरिवहन के लिये उपलब्ध अधिकतम मापमान छार्ट सहित पर्याप्त एवं अद्यतन छार्ट नौ-यात्रा संबंधी दिशा निर्देश बत्तियों की सूची, नाविकों को सूचनाएं, ज्वार भाटा सारणियां एवं अन्य नाविक प्रकाशन होंगे।

(2) आशयित उन समुद्री यात्राओं की सीमा को जिनके लिये नाविक प्रकाशन पर्याप्त है, सुरक्षा उपकरण के लिये अभिलेख में उपलब्धित किया जायेगा।

(3) यदि किसी संकट या ऐसे ही अन्य कारणों से किसी जहाज की आशयित समुद्री यात्रा की सीमाओं को बदलना अपेक्षित हो तो मास्टर ऐसा कर सकता है परन्तु ऐसा करने से पोत की सुरक्षा को कोई खतरा नहीं होना चाहिए।

(4) यदि किसी पत्तन पर अद्यतन नाविक प्रकाशन उपलब्ध नहीं है तो प्रधान अधिकारी जलयान की अगले पत्तन को जहाज ऐसे प्रकाशन उपलब्ध हैं जाने की अनुमति केवल तभी देगा जब ऐसा करना सुरक्षित हो।

19 सेतु प्रक्रिया :—

(1) प्रत्येक पोत का मास्टर सुरक्षित पहरा रखने के लिए स्थायी आदेश तैयार करेगा। ऐसे स्थायी आदेशों में निम्नलिखित सम्मिलित होंगा :—

(क) मुख्य इंजन की उपलब्धता के संबंध में अनुदेश।

(ख) सुरक्षित पहरा रखने के संबंध में पालन की जाने वाली प्रक्रिया;

(ग) पहरे की संरचना और वे परिस्थितियां जिनमें परिवर्तन किया जा सकता है।

(घ) पत्तन नयन जल-क्षेत्र, प्रतिबंधित जल-क्षेत्र, या अधिक यातायात वाले और अल्प दूर्यता वाले क्षेत्रों में नौपरिवहन के समय पालन की जाने वाली प्रक्रिया—

(ङ) अल्प दूर्यता या मौसम खराब होने पर पालन की जाने वाली प्रक्रिया; और

(च) सदैह होने पर किसी भी समय मास्टर को बुलाने के लिये अनुदेश।

(2) प्रत्येक पोत का मास्टर यह सुनिश्चित करेगा कि आशयित यात्रा के लिये यात्रा-योजना तैयार की जाये, उसकी संवीक्षा की जाए और जलयान की यात्रा के दौरान प्रहरी अधिकारी को वह सदैव उपलब्ध हो। ऐसी योजना को यात्रा के दौरान मानीटर किया जाएगा और जहां आवश्यक हो, अद्यतन बनाया जायगा। यह यात्रा योजना छार्ट पर या ऐसी ही किसी अन्य वस्तवेज में निम्नलिखित के संबंध में सीमित नहीं होगी :—

(क) सूर्योदय और सूर्यास्त का समय;

(ख) यदि समुद्र तटीय जल क्षेत्र में हो, तो पूर्ण ज्वार या न्यून ज्वार का अनुमानित समय।

(ग) विभिन्न जलभागों पर यात्रा की अनुमानित दूरी और यदि मार्ग 'परिवर्तन की योजना बतायी गई है तो उन स्थानों पर पहुंचने का अनुमानित समय;

(घ) जोखिम और छिड़ने जप वाले स्थान जिनके संबंध में विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है;

(ङ) उन क्षेत्रों का विवरण जहां पोत को नो-परिवहन स्वयं करना चाहता है;

(च) वे निर्विष्ट मार्ग जिनका प्रयोग अल्प दूर्यता में किया जाएगा और रडार तथा अन्य नौपरिवहन सहायकों का प्रयोग;

(छ) यदि कोई नौपरिवहन उपकरण अपनी सामान्य क्षमता से कम स्तर पर कार्य कर रहा है तो उसका विवरण।

(ज) अधिक यातायात वाले क्षेत्र और ऐसे क्षेत्र जहां से बड़ी संख्या में उत्स्व जलयानों या चलते जलयानों के गुजरने की संभावना हो सकती है और प्रबल धाराओं वाले क्षेत्र;

(झ) पहरे के लिए अतिरिक्त सहायता मांगने की प्रक्रिया।

(ञ) नौपरिवहन उपकरणों के प्रयोग से संबंधित नियम पुस्तकों और अन्य सूचना प्रहरी अधिकारियों के उपयोग के लिए सेतु पर उपलब्ध होगी।

(४) (क) अपने कर्तव्यों का पालन में प्रहरी अधिकारी, पोत के सुरक्षित नौपरिवहन के लिए हर समय जिम्मेदार होगा।

(ख) जहां आवश्यक हो, प्रहरी अधिकारी अन्य अधिकारी को अपने नौपरिवहन संबंधी कर्तव्यों में सहायता करने के लिए कहेगा। प्रहरी अधिकारी किसी भी समय मास्टर को बुलाने के लिए स्वतंत्र होगा।

(ग) यदि अन्य अधिकारी या मास्टर को सेतु पर बुलाया जाता है तो प्रहरी अधिकारी सुरक्षित नौपरिवहन के लिए तब तक जिम्मेदार बना रहेगा जब तक कि मास्टर या ऐसा अन्य अधिकारी उसे विनिर्दिष्ट रूप से यह सूचित नहीं करता है कि उसने प्रहरी की जिम्मेदारी संभाल ली है।

५(क) प्रत्येक प्रहरी अधिकारी द्वाकर विनियमों का सख्ती से पालन करेगा।

(ख) यदि किसी एक पात द्वारा उन नियमों का पालन न किए जाने के कारण, टक्कर होने की स्थिति पैदा हो जाती है, चाहे परिणामस्वरूप टक्कर हो या नहीं, ऐसी घटनाओं का ब्यौरा और दोनों पोतों की पहचान के बारे में प्रधान अधिकारी को रिपोर्ट की जाएगी जो ऐसी प्रत्येक रिपोर्ट की जांच करेगा और अपने निष्कर्ष महानिदेशक को भेजेगा।

(6) प्रत्येक प्रहरी अधिकारी, अच्छी तरह पहरा देगा जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैः—

(क) आंख, कान और रखकर सतर्कता से पहरा देना जिसमें वर्तमान स्थिति पर पूरी तरह पकड़ सुनिश्चित की जा सके जिसमें हर समय पोतों की उपस्थिति, आस-पास के सीमा चिन्ह, और पोतों की स्थिति भी है;

(ख) सभीप्रारुद्ध जलयानों का संचलन और कंपास पर दिक्ष्यान की सूक्ष्मता से प्रेषण;

(ग) पोत और तट बत्तियों की पहचान करना;

(घ) यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता कि आटो पायलट से या उसके बिना सही मार्ग पर चल रहे और हाथ में चलाने के समय हील मंबंधी आदेशों का सही-सही निष्पादन किया जा रहा है;

(ङ) रडार और प्रतिध्वनि गंभीरता मापी प्रदर्शन का प्रेषण; और

(ख) मौसम, दृश्यता और ममुद्र की स्थिति में परिवर्तन का प्रेषण।

(7) प्रहरियों को बदलना—

(क) भारमोचन प्रहरी अधिकारी यह सुनिश्चित करेगा कि उसके प्रहरी सदस्य अपने कर्तव्यों का निष्पादन करने में पूर्णतया सक्षम हों और विशेष रूप से उनकी आंखें गत में निगरानी करने की अभ्यन्तर हों। वह तब तक प्रहरी का कार्य नहीं करेगा जब तक उसकी दृष्टि की दण्डाओं के लिए पूर्णतया अभ्यन्तर नहीं हो जाती और वह निम्नलिखित के संबंध में स्वयं को संतुष्ट नहीं कर सकता:—

(i) जलयान-परिवहन गे संबंधित स्थायी ग्रादेश और अन्य विशेष अनुदेश;

(ii) जलयान की स्थिति, जल-मार्ग, गति और छुबान;

(iii) वर्तमान और पूर्वानुमानित ज्वार धाराएं, मौसम दृश्यता और इन कारकों का जलमार्ग और नदि पर प्रभाव;

(4) नौपरिवहन स्थिति में निम्नलिखित सम्मिलित हैः—

(1) समस्त नौपरिवहन और मुक्ता उपकरणों की प्रवालन स्थिति;

(2) धूर्णाथ और चुम्बकीय कंपास की सुटियाँ;

(3) आस-पास के क्षेत्रों में जलयानों का परिवहन;

(4) स्थितियाँ और खतरे जिनमें पहरे के दौरान सामना हो सकता है;

(5) नोदल की निकासी पर हील, ट्रिम, जल के धनत्य और स्कैवेट के संभावित प्रभाव।

(ख) यदि प्रहरी अधिकारी के भारमुक्त दूसरे के समय, किंगी खतरे सेवन के लिए कोई युक्ति चालन या अन्य कार्रवाई की जा रही हो तो ऐसी कार्रवाई के पूरे होने तक प्रहरी को भार मुक्त नहीं किया जायगा।

(ग) प्रहरी अधिकारी भार मोचन अधिकारी को पहरे संबंधी कार्य नहीं सौंपेगा यदि उसके पास यह विश्वास करने का कारण हो कि भार मोचन अधिकारी में ऐसी कोई अक्षमता है जिसमें वह अपने कर्तव्यों को प्रभावी रूप से नहीं कर पायेगा। ऐसे प्रत्येक मामले में पहरे संबंधी कार्य सौंपने सेपहने साम्टर को सुचित किया जायेगा।

8. प्रहरी अधिकारी यह गुनिश्चित करने के लिये नियमित जांच करेगा कि:—

(क) नाविक या स्वचालित पायलट जहाज को मही मामले में ले जा रहा है;

(ख) मानक कम्पास त्रुटि की जांच पहरे के डॉरान करने में कम एक बार और जब अन्य हो जलमान में किए जाने वाले किसी बड़े परिवर्तन के पश्चात् की जाती है;

(ग) मानक और धूर्णाथ कम्पासों का बार-बार मिलान किया जाता है और यजर देने वाली घड़ियों का आपस में समय मिलाया जाता है;

(घ) स्वचालित पायलट प्रभावी स्प में पोत को चला रहा है; और

(ङ) नौपरिवहन और मिगनल बत्तियों और नौपरिवहन संबंधी अन्य उपस्थित उचित स्प में कार्य कर रहे हैं;

(9) समृद्धतटीय जल क्षेत्र में नौपरिवहन :—प्रहरी अधिकारी सभी सुसंगत नौपरिवहन संबंधी चिह्नों को सुनिश्चित पहचान करेंगा। पोत की स्थिति को निश्चित अंतरालों पर निर्धारित किया जायेगा, जिनकी आपूर्ति समीपस्थि खतरे, स्थिति स्थिरीकरण प्रणाली, पोत की गति और प्राप्त अनुभव जैसे कारकों के आवाह पर मास्टर के बिनेकानुसार निर्धारित की जायेगी। योजनावधि तरीके से लंगर डालने या पत्तन प्रदेश करने जैसे भाष्मलों में स्थिति की निरंतर योजना बनाई जायेगी। जब भी परिस्थितियां अनुमति दें और यिंषेप रूप से जब संदेह हो, वैकल्पिक स्थिति स्थिरीकरण प्रणाली का प्रयोग करके स्थिति को जांच की जायेगी।

(10) सीमित दृश्यता :—जब सीमित दृश्यता की स्थिति उत्पन्न होती है या उत्पन्न होने का संदेह होता है तो प्रहरी अधिकारी, दूजन, सतर्कता प्रणाली, रडार और पतवार का उचित उपयोग करने द्वारा टक्कर विनियमों का पालन कोगा।

(11) पत्तन नयन जल क्षेत्र :—पायलट की उपस्थिति से ही मास्टर या प्रहरी अधिकारी, सुरक्षित नौपरिवहन के प्रति अपने कर्तव्यों और बाध्यताओं से मुक्त नहीं हो जाएंगे। मास्टर और प्रहरी अधिकारी, आशयित मार्ग चिह्नमें पत्तन में लाने और घाट पर लगाने की प्रतिक्रिया भी है, के लिये पायलट की नौपरिवहन योजना से सुपरिचित होगा। वे पायलट, जो पुरा-परा सहयोग करते हैं और जलयान की स्थिति और संचयन पर पूरा नियंत्रण द्वारा रखते हैं। जलमार्ग में परिवर्तन और/या पहिये और/या दूजन विन्यास में परिवर्तन प्रहरी अधिकारी के माध्यम से प्रेपित किया जायेगा। यदि मास्टर या अधिकारी को पायलट की कार्रवाईयों या आशय पर कोई संदेह हो तो वह पायलट से इसका समाधान मांगेगा और यदि फिर भी जंका हो तो जहां कहीं आवश्यक हो सुधारात्मक कार्रवाई करेगा।

20. नौपरिवहन अभिलेख

प्रत्येक पोत का मास्टर नौपरिवहन मार्ग का वक्ता अभिलेख प्रस्तुत करने के लिये कम से कम निम्नलिखित अभिलेख रखेंगा :—

- (1) कालमापी त्रुटि
- (2) मौसम रिपोर्ट
- (3) चंबकीय दिक्षुचक विचान
- (4) नाइट आर्डर
- (5) नाविक प्रकाशन में संशोधन
- (6) नौवालन उपस्कर का रख-रखाव और उसका ठप्प हो जाना
- (7) दैनिक नौपरिवहन लोग (मेट्रोनाग)

21. स्वचालित पायलट

(1) स्वचालित पायलट जहां कहीं भी फिट किए गए हों, सुसंगत आई. एम. ओ. मानक की अपेक्षाओं का पालन करेंगे।

(2) ऐसा प्रत्येक जलयान जिसमें स्वचालित पायलट लगा है, का नाइटर स्वचालित पायलट का लक्ष्य समय तक उपयोग करने रहने के पश्चात् और किसी भी स्थिति में जलयान में हस्तचालित स्टेयरिंग का प्रयोग करके जलयान के संचलन के दो घटे पहले हस्तचालित स्टेयरिंग की जांच करवाएगा।

(3) जब अन्य पोत एक दूसरे के सामने हों तो स्वचालित पायलट की महायता से जलमार्गों में परिवर्तन से बचा जाएगा। टक्कर विनियमों के अनुपालन में जलमार्गों में परिवर्तन केवल हस्तचालित स्टेयरिंग द्वारा बिया जाएगा।

(4) अति यातायात सघनता क्षेत्रों में या सीमित दृश्यता की स्थितियों में यह सभी अन्य संकटपूर्ण परिवहन स्थितियों में, यदि स्वचालित पायलट उपयोग में हों तो यह अपेक्षित है कि तात्कालिक रूप से पोत के स्टेयरिंग का हस्तचालित नियंत्रण स्थापित किया जाए, यदि किसी मामले में ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है तो अर्हता प्राप्त नाविक द्वारा समय हस्तचालित स्टीयरिंग नियंत्रण करने के लिए उपलब्ध रहेंगे।

22. स्टीयरिंग गियर का प्रचालन

उन क्षेत्रों में जिनमें नौपरिवहन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है और जब भी पोत का पत्तन नयन क्षेत्र या सीमित जल क्षेत्र में या अति यातायात सघनता के क्षेत्रों में या पथ निर्धारण प्रणाली में प्रयोग किया जा रहा है और जब ऐसे यूनिट समकालिक प्रचालन में समर्थ हो तो एक से अधिक स्टीयरिंग गियर पावर यूनिट प्रचालन में होंगे।

23. स्टीयरिंग गियर परीक्षण और अस्थाय

(1) प्रस्थान करने के पूर्व 12 घटे के अंदर पोत के स्टीयरिंग गियर की जांच की जाएगी और परीक्षण किया जाएगा। परीक्षण प्रक्रिया जहां लागू हों, में निम्नलिखित के प्रचालन समिलित होंगे :—

- (क) मुख्य स्टीयरिंग गियर;
- (ख) सहायक स्टीयरिंग गियर;
- (ग) प्रणालियों में स्टीयरिंग गियर;
- (घ) नीचालन सेतु से श्रीर साथ ही स्टीयरिंग गियर के नियंत्रण के सन्निकट की दूरस्थ स्टीयरिंग अवस्थिति में स्टीयरिंग अमता—
- (ङ) आपात-स्थिति में विद्युत आपूर्ति, जहां उपलब्ध हो;
- (च) रडार की बास्तविक स्थिति बहाने वाले रडार एग्जेक्यूटर;

(छ) सेतु और दूरस्थ स्टीयरिंग अवस्थिति के मध्य संचार ;

(ज) स्टीयरिंग गियर की विद्युत सूनिट फेल हो जाने पर बजने वाले अलार्म; और

(झ) स्वचालित पूथवकरण व्यवस्थाएं तथा अन्य स्वचालित उपस्करे ।

(2) (क) एक ब्लाक आकृति सहित साधारण प्रचालन अनुदंग, जिनमें दूरस्थ स्टीयरिंग गियर नियंत्रण प्रणालियों के लिए बदलता प्रक्रियाओं को दिखाया गया हो, तथा नौपरिवहन सेतु पर तथा स्टीयरिंग गियर कंपार्टमेंट में स्टीयरिंग गियर विद्युत यूनिटों को स्थायी रूप से दिखाया जाना चाहिए ।

(ख) स्टीयरिंग गियर के प्राचालन और रखरखाव से संबंधित पोतों के सभी अधिकारी, पोत पर किट होने वाली स्टीयरिंग प्रणालियों के प्रचालन की तथा एक प्रणाली को दूसरी प्रणाली में बदलने की प्रक्रियाओं से सुपरिचित होंगे ।

(3) इस नियम के उपनियम (1) और (2) में विहित नेमी जांचों और परीक्षणों के अतिरिक्त, आपातकालीन स्टीयरिंग प्रक्रियाओं के अभ्यास करने के लिए कम से कम तीन माह में एक बार आपातकालीन स्टीयरिंग ड्रिल कराई जाएगी ।

(4) इन ड्रिलों में स्टीयरिंग गियर कंपार्टमेंट के भीतर से सीधा नियंत्रण नौपरिवहन सेतु से चंसूचना प्रक्रिया तथा जहां लागू हो वहां वैकल्पिक विद्युत आपूर्तियों का प्रचालन समिक्षित है ।

(5) 24 घंटा में कम से कम बार-बार नियमित यात्रा पर बाने वाले प्रत्येक पोत में प्रति सत्राह कम से कम एक बार इस नियम के उपनियम (1) और (2) में विनियोगित विस्तृत परीक्षण होने चाहिए । किसी भी स्थिति में प्रचालन संबंधी परीक्षण प्रस्तावन से पहले किए जाने चाहिए ।

(6) इन नियम के उपनियम (1) और (2) में विहित जांच और परीक्षण की तारीख और उपनियम (4) के अन्तर्गत की जाने वाली आपातकालीन स्टीयरिंग ड्रिलों की तारीख और व्यौरे सरकारी लागू-वृक्त में अभिलिखित की जाएंगी ।

भाग III

नौपरिवहन उपस्कर — साधारण अपेक्षाएं

24 प्रारंभिक संस्थापन —

(1) इन नियमों द्वारा अपेक्षित किसी इलेक्ट्रानिक नौपरिवहन उपस्कर की संस्थापित करने समय प्रत्येक पोत :—

(क) इन नियमों में विनियोगित अपेक्षाओं के अनुसार मुख्यतः आई एम श्री मानक में विनियोगित इलेक्ट्रा-

निक नौपरिवहन उपस्कर की साधारण अपेक्षाओं का अनुपालन करने हुए वह उपकरण संस्थापित करेगा ।

(ख) बंधन ऐसा उपस्कर संस्थापित करेगा जिसका टाईप अनुमोदित हो परन्तु यह तब जबकि किसी अन्य प्रणाली जो कि सम्ब्र में जीवन सुरक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अभियान 1974 का पक्षकार हो, द्वारा अनुमोदित किसी उपकरण को ऐसे उपकरण के व्यारे और ऐसे प्रणाली द्वारा अनुमोदित प्रमाणपत्र महानिदेशक को प्रमुखत किए जाने पर दाष्ट अनुमोदन किया गया हो ।

(ग) इन नियमों में विनियोगित उपस्कर के प्रचालन के लिए और किसी भी बैटरी की जांच करने व उसे चार्ज करने के प्रयोगनार्थ विद्युत प्रदाय का उपयुक्त एवं दक्ष स्वांत उपलब्ध कराना । विद्युत ऊर्जा का लोटा पोत की मसुदी यात्रा के द्वीरान हर समय उपलब्ध होगा और पोत के दक्षन पर बड़े रहने के दौरान हर उचित समय पर उपलब्ध होगा । विद्युत ऊर्जा का प्रदाय नीचे दी गई सीमा में अधिक नहीं होगा ।

(i) प्रत्यावर्ती धारा (ए०सी०) --- प्रदाय बोल्टन फेरफार --- 10%

(ii) एक्ट धारा (डी०सी०) --- प्रदाय 110 से 220 बोल्ट --- 10% से 20% 2432 + 30% में --- 10%

(घ) प्रत्येक उपस्कर के लिए नियमित वातां को पूर करने वाले प्रचालन और नवीनिय नियम प्रस्तुत रखता :

(i) ऐसे उपस्करों के भाग्य में जिनका डिजाइन ऐसा हो कि उसके घटक स्तर के दोष का पता लगाना हो और उसकी मरम्मत पोत पर ही कर पाना संभव हो, तो नियम प्रस्तुत में पूरे परिपथ (सर्किल) प्रारंभ, घटक अभिन्नास और घटक अवयवों की मूली होनी चाहिए ।

(ii) ऐसे उपस्कर के भाग्य में, जिसमें ऐसे जटिल (माइक्रो) हो जिनके घटकों में दोष का पता लगाना और मरम्मत करना व्यवहार्य (संभव) न हो, नियम प्रस्तुत में इस बात की परिष्कृत जानकारी दी जानी चाहिए, कि दोष-पूर्वत जटिल माइक्रो की वैज्ञानिकी की जाए, दोष का पता करने लगाया जाए और कैसे बदला जाए । अन्य माइक्रों और ऐसे वित्त घटकों के संबंध में नीलाइनों जो हिन्दा न हो, उपचरण (1) को अपेक्षाएं वरीं की जानी चाहिए ।

(अ) दूसरी अनुसूची में विनिर्दिष्ट औजार, मापक यंत्र और अतिरिक्त पुर्जे रखना ।

(ब) इन नियमों में विनिर्दिष्ट सभी नौपरिवहन उपस्करों को पर्याप्त सुरक्षित पहुंच में रखना ताकि यथावत उनका अनुरक्षण व समायोजन किया जा सके । ऐसा फूंच मार्ग रडार और दिशा निर्धारक एंटेना के अनुरक्षण व समायोजन के लिए भी बनाया जाना चाहिए ।

(2) यदि पोत ने अपना रजिस्ट्रीकरण बदलवा लिया हो और पहली बार भारतीय रजिस्ट्री प्राप्त की हो तो ऐसे पोतों में प्रथम नौपरिवहन उपस्करों के संबंध में यह समझा जाएगा कि ये इन नियमों के अनुरूप हैं, परन्तु वह तब जबकि—

(क) यह उपस्कर उस प्रणालीन द्वारा स्वीकार किया गया है, जिसके प्रधीन पोत पहले रजिस्ट्रीकृत था, और

(ख) यह उपस्कर सुविधागत प्राइवेट एमो. ओ. मानक के अनुरूप ही ।

25. नौपरिवहन उपस्कर का स्थान निर्धारण करना :-

(1) ऐसी कोई भी यूनिट जिसे खुला संस्थापित करते या ऐसी किसी स्थिति में जिससे सामान्यतः नभी या जल का प्रवेश हो जाता हो, संस्थापित किए जाने के लिए अनुमोदित न किया था हो, खुला संस्थापित नहीं की जाएगी ।

(2) कोई भी नौपरिवहन या संचार उपस्कर संस्थापित करते समय पोत के खुम्बकीय विनियोगक्रमों की यथार्थता की सुरक्षा की जाएगी ।

(3) ऐसे उपस्कर पर या अनुमोदन प्रमाण-पत्र में वह सुरक्षित दूरी स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट की जानी चाहिए जो किसी अनुमोदित उपस्कर और मानक एवं खुम्बकीय विनियोगक्रम के बीच होनी चाहिए ताकि विनियोगक्रम की यथार्थता प्रभावित न हो सके । ऐसे उपस्कर की संस्थापना के समय सुरक्षित दूरी कठोरता से बनाए रखी जाएगी ।

परन्तु यह कि जब ऐसी सुरक्षित दूरी बनाए रखना व्यवहार्य न हो तो महानिदेशक उतनी कम दूरी की अनुमति दे सकते हैं जितनी से विनियोगक्रम पर पड़ने वाला प्रभाव स्थायी हो और उसे विनियोगक्रम के समायोजन से सही किया जा सके ।

(4) उपस्कर के लिए विनिर्दिष्ट सुरक्षित दूरी में ऐसे उपस्कर के साथ संस्थापन के लिए जीडी जाने वाली संरचनाओं को हिसाब में नहीं लिया गया है । यदि ऐसी संरचनाएं आवश्यक हों तो सुरक्षित दूरी अवधारित करके उपस्कर की संस्थापना उतनी दूरी पर की जाएगी ।

(5) उपस्कर के लिए अतिरिक्त पुर्जे के भण्डारण के लिए भी उस उपस्कर के लिए विनिर्दिष्ट सुरक्षित दूरी अपेक्षाओं का अनुपालन किया जाना चाहिए जिसके लिए अतिरिक्त पुर्जे का भण्डारण किया जाता है ।

(6) (क) यदि ऐसे किसी उपस्कर से होने वाले रेडियो व्यवहारण से रेडियो संचारण के प्रभावित होने की संभावना हो तो ऐसे उपस्कर को रेडियो संचारण प्रणाली से विलक्षण अलग रखा जाना चाहिए ।

(ख) नौपरिवहन संस्थापन से होने वाले विद्युत व्यवहारण या मशीनी शोर से अन्य किसी उपस्कर का दृश्य चालन प्रभावित नहीं होना चाहिए ।

(ग) नौपरिवहन संस्थापन से होने वाला शोर इर्दीचन के सदस्यों को भले ही व उपर्युक्त पर या नहीं, विश्वास्य न करें ।

(घ) नौपरिवहन उपस्कर ऐसे स्थान पर नहीं जाया जाना चाहिए जहां पर वह अत्यधिक गर्भी और/या धूएं से काम वंद हो जाए या उसके रख रखाव (अनुरक्षण) में अनावश्यक कठिनाई हो ।

(ङ) एंटेना वाले नौवहन उपस्कर याकरण स्थायी इस प्रकार लगाए जाने चाहिए कि संस्थापन के कार्य निपादन और विश्वसनीयता पर चंपन का अतिकुल प्रभाव न पड़े ।

(च) हर उपस्कर इस तरह डिजाइन किया जाना चाहिए कि उसमें ऐसे सुरक्षा उपायों की व्यवस्था हो जो विलगकारी स्विचों, द्वारा स्विचों या इसी तरह की अन्य युक्तियों के माध्यम से उच्च बोल्टों का अभिगम रोक सके या यह सुनिश्चित कर सकें कि पहुंच केवल स्पेनर या पेचकस जैसे श्रीजारों के माध्यम से ही संभव है ।

(छ) यदि कार्मिकों को आर एफ या एक्स विकिरण से खतरे की संभावना हो तो उपस्कर पर चेतावनी नोटिस लगाए जाने चाहिए जिन पर सुरक्षित दूरी दर्शाई गई हो । इसी तरह की चेतावनी ऐसे उपस्कर की पुस्तक में दर्शात होनी चाहिए ।

(ज) उपस्कर का स्थान और खुम्बकीय विनियोगक्रम तथा अन्य उपस्करों से उसकी दूरी दिखाने वाली अनुमोदित सुरक्षित दूरी योजन पोत पर रहनी चाहिए ।

26. नौपरिवहन उपस्कर का अनुरक्षण :-

(1) नौपरिवहन उपस्कर का दृश्य काम चलाऊ अवस्था में रखने के लिए इन नियमों में विहित प्रत्येक उचित उपाय किए जाने चाहिए । किसी उपस्कर की खराबी के कारण पोत की यात्रा के लिए अयोग्य नहीं ठहराया जाना चाहिए और न ही उस पत्तन पर रोके रखने का कारण बनाया जाना चाहिए, यदि—

(i) विनियम में विनिर्दिष्ट के समरूप एक अतिरिक्त संस्थापन लगा हुआ हो और वह अच्छी काम चलाऊ हालत में हो, या

(ii) उस पत्तन पर कोई समुचित भरमत ऐजीसीन हो, या

(iii) उस पत्तन पर अतिरिक्त पुर्जे सुगमता से उपलब्ध न हों ।

(2) यदि नौपरिवहन उपस्कर ठीक से कार्य न कर रहो हो तो:—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा कर रहे पोत को अगले ऐसे पत्तन तक यात्रा करने की अनुमति दी जा सकती है जहाँ वैसी मरम्मत सुविधा या अतिरिक्त पुर्जे उपलब्ध हो सकते हों।

(ii) भारत की तटीय यात्रा कर रहे पोत को ऐसे उपस्कर के बिना एक मास तक यात्रा की अनुमति दी जा सकती है। प्रमुख अधिकारी, परिस्थितियों पर विचार करके उस अवधि को अधिकतम तीन मास तक बढ़ा सकता है।

(3) समुद्री यात्रा शुरू करने से पूर्व रडार संस्थापन के कार्य की जांच की जाएगी और यह जांच जहाज की यात्रा के दौरान हर पहर (चार घंटे की अवधि) में कम से कम एक बार अवश्य की जानी चाहिए।

(4) 1600 टन या अधिक भार वाले प्रत्येक ऐसे यात्रेशामी पोत, में, जिसमें रडार संस्थापन लगा हुआ हो, कम से कम एक ऐसा अधिकारी या कर्मी दल का मदस्य अवश्य होना चाहिए जो रडार अनुरक्षण के लिए पर्याप्त रूप से अर्हता प्राप्त हो परन्तु यह कि,

(क) यदि किसी ऐसे समय, जब पोत समुद्री यात्रा पर जा रहा हो, ऐसे अधिकारी या कर्मी दल के मदस्य को वीमानी असमता या अन्य अप्रत्याधित परिस्थितियों के कारण साथ ले जाया गया हो तो, इस नियम के उपर्युक्त एक सप्ताह की अवधि या अगले पत्तन तक जी यात्रा की अवधि के लिए इनमें से जो भी बाद में हो, नाम नहीं होंगे। समुद्री यात्रा के दौरान ऐसी एक अवधि के तुरंत बाद दोबारा ऐसा अवधि नहीं होनी चाहिए।

(ख) ऐसे प्रत्येक अवसर पर मास्टर या स्यामी प्रमुख अधिकारी को यह सूचना देगा कि वह इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त रूप से अर्हता प्राप्त व्यक्ति को साथ ले जाने में असमर्थ है और इस बात की प्रविष्टि सरकारी लाग बूँक में करेगा।

(5) जब तक ऐसा जहाज समुद्री यात्रा कर रहा हो, (जिसमें रडार संस्थापन किया जाना अपेक्षित हो और उसमें रडार का पहरा दिया जा रहा हो), तो रडार संस्थापन मास्टर की या प्रमाणित प्रहरी अधिकारी के निर्णयाधीन होना चाहिए।

(6) इन नियमों के प्रयोजनों के लिए, कोई अधिकारी या कर्मी दल का सदस्य रडार अनुरक्षण के लिए अर्हता प्राप्त भाना जाएगा यदि उसके पास निम्नलिखित दो:—

(क) रडार अनुरक्षण प्रमाण पत्र

(ख) महानिवेशक द्वारा खण्ड (क) में उल्लिखित प्रभान पत्रों के समतुल्य भान्यताप्राप्त प्रमाण पत्र

(ग) रडार विनियोग के पाठ्यक्रम की समाप्ति पर प्रदत्त विनियोग प्रकार के रडार संस्थापन का रखरखाव करने के लिए दिया गया प्रवीणता प्रमाण पत्र।

भाग—IV

नौपरिवहन उपस्कर यान संबंधी अपेक्षाएँ

27. 150 टन और इससे अधिक सकल भार वाले पोत:—

(1) यह नियम 150 टन और इससे अधिक सकल भार वाले पोतों पर लागू होता है।

(2) ऐसे प्रत्येक पोत में ऐसे निम्नलिखित उपस्कर होंगे:—

(क) पोत की केन्द्र रेखा पर और कम्पास बक्स पर लगाया गया मानक चुंबकीय दिक्सूचक।

(ख) पोत की केन्द्र रेखा पर लगा और कंपास बक्स पर फिट किया गया स्टीयरिंग चुंबकीय विक्रम्भूत अथवा ऐसी व्यवस्था जिसमें (क) के अधीन अपेक्षित मानक दिक्सूचक द्वारा उपलब्ध कराई गई हैंडिंग सूचना उपलब्ध कराई जाती है और जो मुख्य स्टीयरिंग स्थिति पर नाविक द्वारा आसानी से पढ़ी जा सकती है।

(ग) जहाँ मानक और स्टीयरिंग दिक्सूचक लगा होता है वहाँ मानक दिक्सूचक स्थिति और सामान्य नौपरिवहन नियन्त्रण स्थिति के बीच पर्याप्त संचार माध्यम लगे हों।

(घ) 360 क्षितिज चाप पर चावत साथ रूप में विकस्थिति का पता लगाने के साधन परंतु भारतीय नट छापार में लगे 300 टन से कम सकल भार वाले पोतों को उपयुक्त अपेक्षा से उस स्थिति में छूट दी जा सकती है जहाँ ऐसा समझा जाता है कि पूर्णतया पालन अव्यवहार्य होगा।

(3) उपनियम 2 में निर्दिष्ट प्रत्येक चुंबकीय दिक्सूचक उचित रूप से व्यवस्थित किया जाएगा और इसकी सारणी अवर्गित विचलन ब्रॉपुल पर हर बज्जे उपलब्ध रहेगा।

(4) उक्त सारणी अथवा अवर्गित विचलन की यथार्थता की जांच प्रत्येक वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य की जाएगी अथवा यह जांच नियम 20 की अपेक्षाओं के अनुसार रखे गए दिक्सूचक विचलनों अभिलेख

से की जाएगी जहां किसी पोत में ऐसे सारभूत संरचनात्मक परिवर्तन अथवा फेरवर्दल किए गए हों जिससे उक्त सारणी अधिका वक्र प्रभावित हो सकता है अथवा जहां अत्यधिक अवशिष्ट विचलन देखने में आये हों वहां चुम्बकीय दिक्सूचक को पुनः स्थिति किया जाएगा और नयी सारणी अथवा अवशिष्ट विचलन का नया वक्र उपलब्ध कराया जाएगा।

(5) प्रत्येक ऐसे पोत में मानक दिक्सूचक से अन्तिमों अतिरिक्त चुम्बकीय दिक्सूचक भी लगा हो परंतु यदि पोत में स्टीयरिंग दिक्सूचक और घृणक्षि दिक्सूचक लगा हो तो इस अपेक्षा का अनुपालन यावद्यक नहीं है।

(6) पोत के हैंडिंग के संबंध में सूचना, आपाती, स्टीयरिंग स्थिति, जहां उपलब्ध हो, पर उपर्युक्त माध्योंवारा उपलब्ध कराई जाएगी।

(7) प्रत्येक पोत में एक परावर्ती कोण मापी (सेक्सेट) और एक मूल्यममय मापी (क्रोनोमीटर) लगा होगा।

(8) प्रत्येक ऐसे पोत में भारतीय भौतिक विभाग के समुचित अधिकारी द्वारा आपाती निवेद वायुद्वावमापी अववा पालक वायुद्वावमापी लगा होगा।

28. 150 सकल भार से कम टनभार वाले पोत:—

(1) यह नियम 150 टन सकल भार से कम टन भार वाले जहाजों पर लागू होगा;

(2) ऐसा प्रत्येक पोत, यावतसाध्य नियम 27 के उपबंधों का पालन करेगा। प्रत्येक ऐसे पोत में, हर हालत में:

(क) दिक्स्थिति का पता लगाने;
(ख) जल की गत्तराई मापने के लिए;
(ग) तथा की मई हरी को मापने के सिए स्टीयरिंग दिक्सूचक और अन्य दक्ष साधन लगाए जाएंगे।

29. 500 टन सकल भार यथा उसमें अधिक टन भार वाले पोत:—

(1) यह नियम 500 टन सकल भार वाले तथा उसमें अधिक टन भार वाले पोतों पर लागू होगा।

(2) प्रत्येक ऐसा पोत नियम 27 के उपबंधों का पालन करेगा और साथ ही उसमें निम्नलिखित होंगे।

(क) मुख्य स्टीयरिंग स्थिति में नाविक द्वारा आपाती में पढ़े जा सकने वाला घृणक्षि दिक्सूचक या घृणक्षि रिपीटर।

(ख) रडार दिग्गा संकेत आरेख बनाने की सुविधा सहित रडार संस्थापन जो कि यथासंभव परावर्ती आरेखिक के रूप में भी प्रभावी हो;

(ग) गति और दूरी उपवर्णन करने वाली युक्ति

(घ) सुक्कन कोण और प्रत्येक नोडक की परिक्रमण दर तो दर्शने वाले सूचक अंतर्वाल नोडक अथवा पार्श्व प्रणोद/नोदक लगा हुआ हो, तो ऐसे प्रत्येक नोडक का प्रवालनामक स्थरूप ये सभी सूचक यंत्राकार स्थिति में सुपादप होने चाहिए और

(ङ) प्रतिध्वनि गंभीरता मापी युक्ति।

30. 1600 टन सकल भार और उसमें अधिक टन भार वाले जहाज

(1) यह नियम अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री यात्रा अथवा 500 भील दूरी से अधिक समुद्री यात्रा तथा करने वाले 1600 सकल टन भार और उसमें अधिक टन भार वाले जहाजों पर लागू होगा।

(2) प्रत्येक जहाज नियम 29 के उपबंधों का अनुपालन करेगा और इसके अलावा उसमें निम्नलिखित उपकरण होंगे।

(क) दिक्स्थिति का पाला लगाने के लिए यावत साध्य 360 क्रैनिज चाप पर घृणक्षि रिपीटर अथवा रिपीटर उपर्युक्त रूप से लगाए जाएंगे।

(ख) रेडियो डिग्गा-निर्धारण उपकरण।

31. 10,000 टन सकल भार तथा उसमें अधिक टन भार वाले पोत

(1) यह नियम 10,000 टन सकल भार तथा उसमें अधिक टन भार वाले पोतों पर लागू होगा।

(2) प्रत्येक पोत में नियम 30 में विनिर्दिष्ट उपकरण सही होंगे और साथ ही वह इस नियम का भी अनुपालन करेगा।

(3) ऐसे प्रत्येक पोत में निम्नलिखित उपकरण होंगे:—

(क) दो रडार संस्थापन लगे हो, जिसमें से प्रत्येक रडार को स्वतंत्र रूप से चलाया जा सकेगा।

(ख) इस उपनियम के खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट रडार संस्थानों में से कम में कम एक रडार 9 जी एच जैड आपूति पर कार्य करने योग्य होना चाहिए ताकि वह अतिरिक्त आपट रडार ट्रांसपोन्डर बीकन का पता लगा सके।

(ग) स्वचालित रडार आपूति (लॉटिंग) सहायक

(घ) जल में गति और दूरी को दर्शने वाली युक्ति।

(4) 1 सितम्बर, 1984 को या उसके बाद बनाए गए 10,000 या उसमें अधिक सकल टन भार वाले

पोतों में, उत्तराधिकारित पंजा गृहका दर भी जाएगी।

32. पायलट सीढ़ी की स्थिति :

(1) प्रत्येक पोत में पायलट सीढ़ी अथवा अन्य सुरक्षित और सुविधाजनक साधन की व्यवस्था की जाएगी जो कि सुसंगत आईएम और मानक की अपेक्षाओं का अनुपालन करेगी।

33. पायलट सीढ़ी और अन्य साधितों का उपयोग और उनका अनुरक्षण :

(1) नियम 32 के अधीन पोत पर रखी जाने वाली पायलट सीढ़ी और अन्य साधितों की अचली स्थिति में रखा जाएगा जब पोत पतन पर आ जाए हो अथवा पतन से बाहर हो जब पायलट और अधिकारियों या अन्य व्यक्तियों के पोत पर चढ़ते (पोत रोहण) और उतरने (पोत अवरोहण) के लिए आरक्षित रखा जाएगा।

(2) पायलट अथवा हार्डर मास्टर (बंदरगाह मास्टर) के जहाज में चढ़ने या उतरने के समय पायलट सीढ़ी और अन्य साधितों जैसे क्रियात्मिक उचालकों (हाइटर) का प्रयोग किया जाएगा। इस प्रयोजन के लिए पायलट सीढ़ी के जनादा कोई अन्य सीढ़ी प्रयोग नहीं की जाएगी।

भाग—V

प्रकारों अपेक्षाएँ

34. टैकरों के लिए आपाती रज्जुकर्पण व्यवस्था :—

(1) प्रत्येक टैकर, ग्रामाधिक पदार्थ बाहक और गैस बाहक अथवा 50,000 टन कुल भार या उससे अधिक भार वाले खतरनाक और अनियंत्रित पदार्थ ने जाने वाले जनरल में सुनियन अई.एम.ओ. मानकों का अनुपालन करते हुए आपाती रज्जुकर्पण व्यवस्था का प्रावधान किया जाएगा।

(2) 1,00,000 टन कुल भार या उससे अधिक भार वाले प्रत्येक टैकर या ग्रामाधिक पदार्थ बाहक और गैस बाहक के स्टर्न में भी इसी प्रकार की रज्जुकर्पण व्यवस्था की जाएगी।

(3) ऐसी प्रत्येक रज्जुकर्पण व्यवस्था सदैव पूर्व संज्ञित होगी और इस प्रकार से भागाभिन्न की जाएगी कि कम में कम याक्षित का प्रयोग करके उपकार प्रयोग किया जा सके।

35. समतुल्यता और छूट :—

(1) यदि केन्द्रीय सरकार, किसी मानक चुम्बकीय दिक्षुचक की अपेक्षा को अनुचित या अनावश्यक समझती है तो वह विभिन्न श्रेणियों के पोतों के इस प्रकार की अपेक्षाओं को पूरा करने से तब छूट देसकती है जब समुद्र-यात्रा की प्रकृति, साधारण नौपरिवहन जोखिम न हो और भुग्का को प्रभावित करने वाली अन्य स्थितियां ऐसी हों कि इन नियमों को पूर्णतः लाग करना अनुचित या अनावश्यक हो जाये। ऐसी प्रत्येक छूट अन्य सभी पोतों की सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रख कर दी जाएगी।

का प्रकार पैसा हो जिसमें मानक दिक्षुचक व्यायामान न हो। किन्तु प्रत्येक पैसे पोत में एडियरिंग दिक्षुचक की व्यवस्था की जाएगी।

(2) केन्द्रीय सरकार 500 थकल टन भार से कम तन भार वाले किसी पागत को ऐसी डिशा निर्धारित उपस्कर की प्रेषणा में छूट देसकती है। ऐसी प्रत्येक छूट की संज्ञी देते समय यह ध्यान रखा जायेगा कि ऐसी डिशा निर्धारित उपस्कर, नौपरिवहन उपस्कर और पोत, वायुयान और उत्तरजीवी क्राफ्ट के स्थान के पान लगने में सहायता देने वाले उपस्कर, दोनों ही रूप में आवश्यक हैं।

(3) इन नियमों में विनिर्दिष्ट और 1 मितम्बर, 1984 को या उसके बाद पोत पर संस्थापित किया जाने वाला कोई भी उपस्कर सुसंगत आई.एम.ओ. मानकों के अनुसर होता। एक मितम्बर, 1984 से पहले लगाये गये उपस्करों को, आई.एम.ओ. मानकों के पूर्ण अनुपालन में छूट की जायेगी वज्रते कि उपस्कर साधारणतया कार्यकारी मानदण्ड की अपेक्षा को पूरा करते हों।

(4) यदि इन नियमों की अपेक्षाओं के अनुप्रयोग से 1 मितम्बर, 1984 से पूर्व मन्त्रिमित, किसी पोत में संरचनात्मक परिवर्तन करना अनिवार्य हो जाता है तो ऐसे पोत को शुप्रक गोदी में प्रथम निर्धारित पड़ाव को ध्यान में रखते हुए अपेक्षित उपस्कर लगाने के लिये गमन्य मीमा बढ़ाव जायेगी।

(5) इन नियमों में अन्यथा उत्तराधित के सिवाय केन्द्रीय सरकार ऐसे विशेष पोतों को उस स्थिति में आंशिक या मर्शल स्प में छूट देसकती है जब कोई पोत ऐसी समद्र-यात्रा कर रहा हो जिसमें पोत में समुद्र तट की अधिकतम दूरी समद्र-यात्रा की दूरी और उसकी प्रकृति, साधारण नौपरिवहन जोखिम न हो और भुग्का को प्रभावित करने वाली अन्य स्थितियां ऐसी हों कि इन नियमों को पूर्णतः लाग करना अनुचित या अनावश्यक हो जाये। ऐसी प्रत्येक छूट अन्य सभी पोतों की सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रख कर दी जाएगी।

प्रत्येक अनुमति

(नियम 14 शब्द)

समूद्र में जीवन की सुरक्षा के लिये अन्तर्राष्ट्रीय अधिसमय, 1974 के उपबन्धों के अधीन जारी सुरक्षा गतिन प्रमाण-पत्र

पोत का नाम रजिस्टरेशन विशिष्ट पहचान अक्षर एकल टन भार

(1)

(2)

(3)

(4)

में, इधे हरताकरी प्रमाणित करता है कि—

1. उद्योग पोत, आई.एम.ओ. संकल्प क-481 (12) तथा वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की द्वारा 76 में दिये गये सिद्धान्तों और मार्गदर्शी रिष्ट्रेशनों को ध्यान में रखते हुए सरकार निश्चित हर क्षेत्र जायेगा। 2. दि. जब व भी वह समुद्रव्यापार में जाने पर न चै दी गई सारणी में दस्तीय गई कार्मिकों की संख्या और ऐसे में वह कार्मिकों को नहीं लेजाता है।

सारणी

क. गोदी विभाग	ख. हंजन विभाग		
रेक	ग्रेड	रेक	ग्रेड
भास्टर	मुख्य इंजीनियर		
मुख्य अधिकारी	दूसरा इंजीनियर		
दूसरा अधिकारी	तीसरा इंजीनियर		
तीसरा अधिकारी	चौथा इंजीनियर		
रेडियो अधिकारी दर्जा	दर्जा पहग		
प्रदूरी अधिकारी			
ग. उत्तरजीविता क्षणट के लिये, प्रमाणपत्र प्राप्त अवधि			
ब. उत्तराक पोतभार (कार्गो) के साथ व्यक्ति:—			
अधिकारी			
दर्जा			
2. यह प्रमाणपत्र निम्नलिखित मेंवा तक सीमित है:—			

3. यह प्रमाणपत्र, अरथात् व्यवस्था संबंधी पत्र, जो प्राधिकारी द्वारा जारी किया जायेगा में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन तक विधिमान्य है।

मुख्य/कलक्षता/फ्लास में जारी किया गया।
प्रधान अधिकारी

समर्पी वाणिज्यिक विभाग
दूसरी अनमूल्ची
नियम 24(1)(ड) देखें।

शैमुखर, मध्यक यंत्र, अनिरुद्ध पुर्जे आदि।

1. सभी देशों द्वारा ले जाये जाने वाले औजार और प्रक्रिये वस्तुएँ।

एक मध्यम आकार की अर्धगोलाई वाली रेती।

एक जोड़ा बड़ा विद्युत-उपमारोधी (इन्सुलेटिड) प्लास

एक जोड़ा लंबे अग्नशाख वाला छोटा प्लास

एक जोड़ा पार्श्व कटान वाला (साईडकॉटिंग) प्लास

एक 6 मि.मि. ट्लेड वाला विद्युत-उपमा रोधी (इन्सुलेटिड) लंबा पेचकस

एक मध्यम लंबाई वाला 6 मि.मि. ट्लेड वाला वाम्बक रहित पेचकस

एक 3 मि.मि. ट्लेड वाला विद्युत-उपमा रोधी (इन्सुलेटिड) सूर्णी पेचकस

एक 1.5 ट्लेड वाला घड़ी साज (बाच्सेकर) पेचकस

एक ग्राम शीर्ष वाला छोटा पेचकस
एक ग्राम शीर्ष वाला मध्यम आकार का पेचकस
वी.ए. मैनर्स का एक मैट (फ्लैट और बक्सा)

(0, 2, 4, 6, और एस.वी.ए. आकार)

वर्तीय त्यंतर पैलेट और बाक्स (एम. 2 ने एम. 6 तक आकार) का एक रीट

25 मि.मि. गार्ली स्थान तक ममत्याजीनीय एक एप्लिकेर ऐनकूंजियां का एक मैट

1.5 मि.मि. में 6 मि.मि. भीटी

ए.एफ. 1.50 आकार की एक ऐन नुजी।

पोत बोल्टों के लिए उपयुक्त पी.मी.बी. के साथ प्रयोग करने के लिए प्रकलाइट ड्यूबी सॉल्डरिंग आवश्यक एक रोल्डर एक्सट्रैक्टर

एक टार्च या नुवाल्स निरीक्षण लैम्प

25 ग्राम पैट्रोलियम जैली

100 ग्राम गार-ओडी-टांका

100 ग्राम विद्युत-उपमारोधी टेप

100 ग्राम स्विच स्नेहक

6 भीटर नम्बर विद्युत-उपमारोधी (इन्सुलेटिड) नार (5 प्रमियर)

निम्नलिखित वस्तुओं की मात्रा :—

प्रयोग की जा रही मशीन के लिए समुचित ग्रीस (जहाँ कहीं उपयुक्त हो)।

सिलोकोन वांगिक

स्कैनर शियर काच (जहाँ कहीं समुचित हो) पृष्ठ वायर 5 प्रमियर और 15 प्रमियर के लिए नेत्र

ट्रिपणी :—

(क) रेडियो स्थापना विनियमों के अनुसूच ने जाने के लिए अरेक्षित औजारों के सूचीबद्ध औजारों के अनुमार दुवारा ले जाने की आवश्यकता नहीं है।

(ख) उत्तरक नियम पुस्तक में दिए गए विवरणों के अनुमार आवश्यक होने पर किसी विशेष औजार को भी ले जाया जाएगा।

2. मापक यतः

सभी पोतों पर 20 के ओप बोल्ट को न्यूनतम संवेदनशीलता वाला 10 एमियर्स तक प्रत्यावर्ती धारा और द्वितीय धारा के पठन में सधम 1 किलोवाट तक बोल्टता और 1 के ओप में 10 एम ओप तक प्रतिरोधक शक्ति वाला एक उच्च ग्रेड का मल्टीमीटर लगाया जाएगा।

नीचे पाद टिप्पणी में विनिर्दिष्ट क्षेत्र से बाहर प्रचालित पोतों पर मल्टी मीटर या 20 किलो वाट तक ई एच टी बोल्टता के मापने के अन्य साधनों के साथ प्रयोग के लिए एक उपयुक्त 1-ई एच टी मल्टीव्हायर लगाया जाएगा।

नीचे पाद टिप्पणी में विनिर्दिष्ट क्षेत्र से बाहर प्रचालित पोतों पर न्यूनतम 5 मीटर अर्हज की बैंड की चौड़ाई वाला दोहरे अनुरेखा या दिवीमा वाला एक दोलन वर्ण लगाया जाएगा।

3. राडार संस्थापना के लिए अतिरिक्त पुर्ज और अतिरिक्त

उपस्कर (संस्थापित राडार के लिए जैसा समुचित हो) : इस सूची में वे अतिरिक्त पुर्जे हैं जो व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं। यह बात ध्यान में रखी जाए कि राडारों में अन्य मद्दें भी हो सकती हैं जिन्हें सुविधा के लिए ले जाया जा सकता है किन्तु जिनका व्यापक उपयोग न होने के कारण उन्हें सूची में शाखिल किया जाना न्यायसंगत नहीं है। ऐसी अतिरिक्त मद्दों को स्वैच्छिक आधार पर ले जाया जाता है।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक टाइप का एक वाल्व— प्रत्येक टाइप के 5 से अधिक न हों।

प्रत्येक मरीन के लिए ब्रूशों का एक सैट जो राडार संस्थापन में सम्मिलित है।

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का एक मैनेट्रोन प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का एच एमीडीपी एक टी, आर सैल (केवल 3 से.मी. राडार के लिए)

फिट किये गए प्रत्येक टाइप का एक ब्रूश बोर्ड

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का एक हैडिंग मार्कर एन्टीना स्विच असेम्बली।

जननित्र बेयरिंग का एक सैट (यदि केवल एक जनरेटर फिट किया गया हो)

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का टाइम बेस आउट पुट ट्रांजिस्टर का एक सैट।

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का बीडिंगो आउटपुट ट्रांजिस्टर का एक सैट।

सर्विसिंग के प्रयोजनों के लिए एक्सटेंशन लीड और एक्सटेंशन पी.सी.बी. का एक सैट (जहां समुचित हो)

4. धूर्णाक स्थायी दिक्षुब्धक संस्थापनों के लिए अतिरिक्त पुर्ज और अतिरिक्त उपस्कर (उपयोग किये जा रहे उपस्कर के लिए समुचित)

ऐसे पोतों में जिनमें विनियमों द्वारा धूर्णाक स्थायी दिक्षुब्धक संस्थापन होना अपेक्षित है, निम्नलिखित मद्दें ले जायी जाएंगी :

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक कारतूस पूर्ज के लिये दो कारतूस उपयोग किये जा रहे प्रत्येक डायल लैप के लिये दो डायल लैप उपयोग किये जा रहे प्रत्येक टाईप के लिये एक कांच का दिवंश बृत्त।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक टाईप का एक कांच का पेलोरस स्टैंड क्वर।

5. प्रतिव्वनि ग्रभरतामापी संस्थान के लिये अतिरिक्त पुर्ज और अतिरिक्त उपस्कर (उपयोग किये जा रहे उपस्कर के लिये समुचित)

ऐसे पोतों में जिनमें विनियमों द्वारा प्रतिव्वनि ग्रभरतामापी संस्थापन होना अपेक्षित है निम्नलिखित मद्दें ले जाई जायेंगी :—

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक कारतूस पूर्ज के लिये दो कारतूस

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक संकेतक लैंड के लिये एक लैंप एक स्टाइल्स एक अभिलेखन कागज के दो रोल।

6. दिशा-निर्धारक संस्थान के लिये अतिरिक्त पुर्ज और अतिरिक्त उपस्कर (उपयोग किये जा रहे उपस्कर के लिये समुचित)

ऐसे पोतों में जिनमें विनियमों द्वारा दिशा निर्धारक संस्थापन होना अपेक्षित है। निम्नलिखित मद्दें ले जायी जायेंगी।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक कारतूस पूर्ज के लिये दो कारतूस।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक संकेतक लैंप के लिये एक लैंप।

[फा. सं एस आर -11013/1/92-एमए]

एस.के. दरगत, अवर सचिव

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Shipping Wing)

New Delhi, the 19th June, 1997

G.S.R. 289.—Whereas a draft the Merchant Shipping (Safety of Navigation) Rules, 1996 was published, as required by section 356, read with section 458, of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958) and in suppression of Merchant Shipping (Distress Message and Navigational Warnings) Rules, 1964, in the Gazette of India, Part II, Section 3, Sub-section (I) dated 11-5-96 under the notification of the Govt. of India vide GSR 202 dated 26-4-96 for the information of all persons likely to be affected thereby inviting objections or suggestions in respect of said draft rules within a period of forty-five days from the date on which copies of the notification as published in the Gazette of India were made available to the public;

And whereas the said Gazette was made available to the public on 11-5-96;

And whereas no objection or suggestion has been received;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 356, read with section 458 of the Merchant Shipping

Act, 1958 (44 of 1958), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title, commencement and application,—

(1) These rules may be called Merchant Shipping (Safety of Navigation) Rules, 1997.

(2) Save as otherwise provided in these rules, these rules shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

(3) They shall apply to all sea-going Indian ships, and ships other than Indian ships while they are within the territorial waters of India :

Provided that these rules shall not apply to,—

(i) ships not propelled by mechanical means;

(ii) sailing vessels registered under Part XV of the Act;

(iii) fishing vessels registered under Part XVA of the Act; and

(iv) pleasure yachts.

(v) ships employed in trades or operations where bridge arrangements and navigational equipments as may be approved by the Director General of Shipping is provided to suit special navigational and operational requirements.

2. Definitions—

In these rules unless the context otherwise requires,—

(a) "Act" means the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958);

(b) "approved" means approved by the Director General of Shipping;

(c) "automatic radar plotting aid (ARPA)" means a radar provided with automatic means for acquisition and plotting of targets and complying with the relevant International Maritime Organisation Standards;

(d) "bridge" means the area from which the navigation and control of the vessel is exercised and includes the wheel house, chart room and the bridge wings complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;

(e) "collision regulations" means the Merchant Shipping (Prevention of Collision at Sea) Regulations, 1975;

(f) "constructed" in relation to a ship, means a stage of construction where—

(i) the keel is laid; or

(ii) construction identifiable with a specific ship begins; or

(iii) assembly of that ship commenced comprising of at least 50 tons or 1% of the estimated mass of all structural material whichever is less;

(g) "echo sounding device" means equipment used for determining depth of water and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;

(h) "emergency steering position" means position on a ship from which vessel can be steered in the event of a breakdown of the transmission system, used for operation of the steering gear, between the navigation bridge and the steering gear compartment;

(i) "gyro compass" means direction showing equipment using principle of gyroscope and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;

(j) International Maritime Organisation standards means recommendations, guidelines or standards approved and published by the Assembly of the International Maritime Organisation and as amended from time to time.

(k) "international code of signals" means the code of signals approved by the International Maritime Organisation used for communication of safety, emergency and distress messages.

(l) "magnetic compass" means an equipment complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation standards.

(m) "merchant ship search and rescue manual" means the manual published by International Maritime Organisation to provide guidance for the conduct of search and rescue operations at sea;

(n) "mile" means a nautical mile of 1853.144 metres.

(o) "Notices to Mariners" means the notice published by the Chief Hydrographer to the Government of India and includes Navarea warning and annual notices;

(p) "radar installation" means installation used for collision avoidance and navigation and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;

(q) "radio direction finding apparatus" means equipment for finding direction of an incoming radio signal and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards.

(r) "radio regulation" means the radio regulation annexed to the International Telecommunications Convention, 1982;

(s) "rate of turn indicator" means equipments showing the rate at which the ship is turning and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards.

(t) "routeing system" means system of one or more routes or routeing measures aimed at reducing the risk of collisions and groundings and may include traffic separation scheme, 2-way routes, recommended tracks, areas to be avoided, inshore traffic zones, roundabouts, precautionary areas, deep water routes established by the International Maritime Organisation.

(u) "Schedule" means a Schedule to these rules.

(v) "speed and distance indicator" means equipment indicating speed of the vessel and distance steamed by the ship over water and complying with the ship over water and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards.

PART I

Navigational and Safety Communication

3. Communications.—(1) All navigational and safety communications shall be performed using one or more of the following :

(a) procedure specified in the Radio regulations when using the radio telegraphy or radio telephony with or without digital selective calling facility or narrow band direct printing or the procedure specified by International Maritime Satellite Organisation when using satellite based systems.

(b) Codes prescribed in the International Code of signals when language difficulties are experienced.

(c) Standard marine navigational vocabulary when communicating by telephony in the English language.

(2) Every ship of 150 tons gross tonnage and above shall, in addition, to the requirements of Merchant Shipping (Radio) Rules, 1983 carry for the purposes of navigation and safety communications :

(a) a set of International Code Flags,

(b) international code of signals,

- (c) IMO publication on the Standard Marine Navigational Vocabulary,
- (d) Signalling lamp complying with the requirements of the relevant IMO Standard,
- (e) means to transmit distress signals specified in annex IV of Collision Regulations.

(3) Where in any communication a date and time is to be indicated same shall be in universal co-ordinated time (UTC).

4. Distress Message.—(1) Whenever the Master of a ship has reached a conclusion that his ship is in imminent danger which could result in loss of ship or loss of life, he shall send a "distress" message to all ships and coast stations within the range of his communication systems in plain language (preferably in English).

(2) Such message shall be preceded by appropriate code indicating "distress" and shall be transmitted using procedures prescribed in the Radio Regulations.

(3) When sending such messages, at least the following information shall be included :—

- (a) Date and time when signal was originated;
- (b) position of the ship;
- (c) circumstances leading to distress; and
- (d) if the ship is to be abandoned, availability of survival crafts and prevailing weather conditions.

(4) Master of every ship who has ordered "abandon ship" shall order, simultaneously, activation of the auto keying device provided under the Merchant Shipping (Radio) Rules, 1983 and the Emergency Position Indicating Radio beacon provided as per requirements of the Merchant Shipping (Life Saving Appliances) Rules, 1991.

5. Urgency messages.—(1) Whenever the Master of a ship has reason to believe that his ship or the life of any person on board is in danger and there is need for alerting coast stations and other ships but the danger is not sufficiently grave to require abandonment of the ship or immediate assistance of any kind, he shall send an "urgency" message. Such signal shall where practicable, be addressed to a specific coast radio station or to another ship known to be in the vicinity. Such signal may also be used when the master of a ship desires to issue warnings that circumstances are such that it may become necessary for him to send out a "distress" message at a later stage. In such cases, however, the signal need not be addressed to a specific station and the circumstances be indicated clearly.

(2) Such messages shall be preceded by the appropriate code indicating "urgency" and shall be transmitted using procedure prescribed in the Radio Regulations.

(3) When sending such messages at least the following information shall be included :—

- (i) time, date and position of the ship,
- (ii) course, speed and original destination of the ship,
- (iii) nature of problem on board with as many details as practicable,
- (iv) whether any assistance is likely to be required and if so the nature of such assistance.
- (v) whether the ship has been diverted towards nearest port and if so the name of port, expected time and date of arrival at the port and
- (vi) efforts being made to control the adverse situation and results of such efforts.

(4) After sending a message in compliance with sub-rule (1), the Master shall send further messages every hour, if practicable and in any case at intervals of not more than 3 hours. At least the following information shall be included in such messages :—

- (i) time, date and position of the ship,
- (ii) course and speed,

(iii) change in situation, if any, on board.

(5) If the Master of the ship who has sent a message in compliance with sub-rule (1) has reached the conclusion that the ship or life of any person on board is no more in danger or the precautionary action ceases to be necessary or if the ship has reached a port, he shall at once send a message to the coast radio station and ships in area cancelling such "urgency" message.

6. Safety messages.—(1) When the Master of a ship meets with—

- (i) ice,
- (ii) derelict,
- (iii) Storm or tropical revolving storm or mid latitude depression,
- (iv) subfreezing air temperature associated with winds of 68 kms/hour or more causing ice accretion on structure, —
- (v) winds of 95 kms/hour or more for which no storm warning is received, or
- (vi) any other direct danger to navigation,

he shall send a "safety" message by all possible means at his disposal to ships in the vicinity and to the nearest coast radio station with whom he can communicate, with a request to re-transmit the same to the appropriate authority.

(2) Such message shall be preceded by the appropriate code indicating "safety" and shall be transmitted either in plain language in English or by means of the International code of signals or by using the meteorological weather code using procedures prescribed in the Radio Regulations.

(3) When sending such messages, the following information shall be included, namely :—

- (a) in case of ice, derelict, or any other direct danger to navigation—
 - (i) kind of ice, derelict or danger observed,
 - (ii) position of danger when last observed,
 - (iii) time and date when danger was last observed, and
 - (iv) rate and direction of drift, if any,
- (b) in case of tropical revolving storm or mid latitude depression—
 - (i) a statement that storm or depression has been encountered or is developing or exists in the neighbourhood of the ship,
 - (ii) time, date and position of the ship when observation was made,
 - (iii) barometric pressure, corrected in hectopascals (hpa),
 - (iv) barometric tendency during the past 3 hours,
 - (v) true wind direction and force,
 - (vi) state of the sea (smooth, mild, rough, high),
 - (vii) swell height (slight, mild, heavy), true direction from which it is coming, period and length (short average, long),
 - (viii) true course and speed of the ship,
 - (ix) nature and intensity of precipitation during the past 3 hours (slight, intermittent, continuous) and the state of visibility (good, moderate, poor),
 - (x) nature and extent of cloud cover (blue sky, partially cloudy, overcast), and

- (xi) air and sea temperatures,
- (c) in case of winds of 95 kms/hour or more for which no storm warning has been received, the message shall contain similar information as given in clause (b) of this sub-rule, and
- (d) in case of sub-freezing air temperature associated with winds of 68 kms/hour or more, causing ice accretion on superstructure—
 - (i) date, time and position of the ship when the observation was made,
 - (ii) air and sea temperatures, and
 - (iii) wind force and direction.

(4) Whenever a Master has sent a safety message in compliance with clause (b) or clause (c) of sub-rule (3) as the case may be, he may make further observations and transmit the same hourly, if practicable. He shall, in any case, report such observations at intervals of not more than 3 hours so long as the ship remains under the influence of the storm or depression.

(5) Master of any ship on receiving a message transmitted in accordance with this rule shall proceed with up-utmost caution and when necessary alter course and or speed so as to navigate clear of the danger reported. When ice is reported, the Master shall proceed at moderate speed and adopt all possible means to detect the present and navigate with caution.

7. Action to be taken on receipt of 'distress' or 'urgency' Communications.—(1) The Master of a ship on receipt of a message transmitted in accordance with rules 4 or 5 shall forthwith acknowledge the same giving his own position, course, speed and destination.

(2) Where the transmitting ship has indicated the likely requirement of assistance, the Master of the receiving ship shall subject to provision of Section 355 or 355-A of the Act shall indicate whether he is in a position to render such assistance and the facilities available with him for that purpose.

(3) After communicating the information as prescribed in sub-rules (1) and (2) the Master of receiving ship shall cause a continuous listening watch to be maintained on frequencies mutually agreed.

(4) Where after receiving the urgency message or any updating message following such urgency message the Master of the receiving ship does not receive any further messages and he has reasons to believe that the circumstances on board the transmitting ship may have deteriorated, he shall transmit a suitable message to the nearest Rescue Coordination Centre or coast radio station giving all information available and shall be guided by advice rendered by such centre or radio station.

8. Every ship in addition to entries required to be made in the official log book by Section 214 of the Act shall also make the following entries :

- (a) Every safety, urgency or distress message transmitted by the ship and circumstances warranting same.
- (b) Every urgency or distress message received by the ship and action taken thereon.
- (c) Every incidence reported under the provision of sub-rule (3) of rule 11.

9. Search and Rescue Operation.—Every ship proceeding to the assistance of a vessel or aircraft in distress, in compliance with Section 355 of the Act, when required to join a search and rescue operation, shall be guided by the provisions of the Merchant Ship Search and Rescue Manual and by the instructions given by the concerned Rescue Coordination Centre.

10. Merchant Ship Reporting System.—(1) All Indian ships in the Bay of Bengal, Arabian Sea and the Indian Ocean North of 30°S shall report their position, once daily, to the Indian ship position and information reporting system (INSPIRES) described in the annual notices to mariners.

(2) Every Indian ship, hon on voyage from one port to another outside the area specified in sub-rule 1 of this rule shall report its position, once daily, to a ship reporting system established for the area under the provisions of International Convention on Maritime Search and Rescue 1969. In areas where no such system is available every Indian ship shall as far as possible report its position to INSPIRES or to its owners.

(3) Every ship shall make a report whenever a harmful substance is observed at sea or any ship is seen to be discharging a harmful substance in contravention of the International Convention of Prevention of Pollution at Sea 1973 or its protocol of 1978. Such report shall use the appropriate reporting format specified in the INSPIRES and shall transmit the same to the nearest coast radio station or rescue co-ordination centre.

11. Routing systems—

- (1) Every ship shall follow routing systems wherever established.
- (2) Where due to circumstances beyond his control the master of a ship is unable to navigate strictly as directed by a routing, every precaution shall be taken to ensure safety of navigation of all ships in the area including transmission of a 'safety' message to indicate the same. Every such incidence shall be recorded in the official log book and reported to the Principal Officer at the earliest opportunity.
- (3) Every violation of a routing system reported by the appropriate authority or a port state, whether reported by a master or not, shall be investigated by the Principal Officer. The Principal Officer shall also take into account investigation conducted by any other Administration, if any. Report of every such investigation shall be submitted to the Director General.

PART II WATCHKEEPING ORGANISATION

12. General—Unless otherwise specified, this part shall apply to all seagoing ships registered under Part V of the Act.

13. Bridge Design—

- (1) Every ship shall be provided with a bridge.

- (2) The labour of the Bridge shall be inspected and approved by Nautical Adviser when the ship is first registered under the Indian registry. Any ship already registered as an Indian ship when these rules come into force shall be inspected and compliance shall be ensured as far as possible. Structural alteration to such ships shall be specified only where safety of navigation is likely to be affected adversely.

14. Manning of Ships—

- (1) Every ship shall be manned by certificate officers as required under Section 76 of the Act.
- (2) Every ship shall be issued with a Manning Certificate in the form prescribed in First Schedule. Every such certificate shall be valid for a period of not more than five years.

15. Navigational Watchkeeping—

- (1) Safe navigational watch shall be maintained at sea at all times.
- (2) Composition of watch shall be such as to ensure that personnel on watch can deal with all possible emergencies. In any case an helmsman and a watchkeeping officer shall be available on the bridge at all times. While keeping watch the navigational watchkeeping officer shall follow the basic principles to be observed in keeping navigational watch as specified in the relevant IMO standard.

16. Engine room Watchkeeping—

- (1) A safe engineering watch shall be maintained at sea at all times.

(2) Composition of watch shall be such as to ensure that personnel on watch can deal with all possible emergencies. The watchkeeping shall follow the basic principles to be observed in keeping an engineering watch as specified in the relevant IMO standard.

17. Manoeuvring capability—Every ship shall be provided with information on its manoeuvring capability. In particular, the following information shall be displayed conspicuously on the bridge, namely :—

- (a) type of engines and mode of control (i.e. Bridge control, telegraph etc.);
- (b) a table showing relation between speed through water and revolution per minute of propeller;
- (c) revolution per minute of engines at which conventional engine movements of slow, half and full ahead and astern are fixed;
- (d) a diagram showing turning circle with details;
- (e) estimated stopping distances and time taken for the same at full speed and at half speed when in fully loaded and in ballast condition;
- (f) details of crash stop trials;
- (g) time required to put rudder over from hard over on one side to hard over on the other with two motors and one motor only.

18. Nautical Publications—

- (1) Every ship shall carry adequate and up-to-date charts, sailing directions, list of Lights, notices to mariners, tide tables and all other nautical publications for the intended voyage, including the largest scale charts available for coastal navigation.
- (2) The limits of the intended voyage for which the nautical publications are adequate shall be indicated on the Record of safety equipment.
- (3) Where a ship is required to deviate from the limits of the intended voyage on account of distress or other such causes, the master may do so provided safety of the ship is not thereby endangered.
- (4) Where undated nautical publications are not available at a port, the Principal Officer may permit the vessel to sail to the next port where such publications are available only if it is safe to do so.

19. Bridge procedures—

- (1) Master of every ship shall prepare standing orders for keeping a safe watch, and such standing orders shall include—
 - (a) instruction with respect to availability of main engines;
 - (b) procedure to be followed in keeping a safe watch;
 - (c) composition of a watch and the circumstances in which it may be altered;
 - (d) procedure to be followed while navigating in pilotage waters, restricted waters or in areas of high traffic density and poor visibility;
 - (e) procedure to be followed when encountering poor visibility or deterioration in weather, and
 - (f) instructions to call the master at any time when in doubt.
- (2) Master of every ship shall ensure that a passage plan for intended voyage is prepared, scrutinised and available to the Watch Keeping Officer at all times when the vessel is on its voyage, such plan shall be monitored and updated where necessary during the progress of voyage, and the said passage

plan shall show, but not limited to the following on the chart or on any other similar document :—

- (a) times of sunrises and sunset;
- (b) times of high water and low water estimated if in coastal waters;
- (c) estimated distances on various courses and estimated times of arrivals at the positions where alteration of course is planned;
- (d) dangers and shoals that need special attention;
- (e) particulars of areas where the master desires to take over the navigation of the ship personally;
- (f) the specified route to follow when in poor visibility and the use of radar and other navigational aids;
- (g) if any navigational equipment is working below its normal performance standard, the details thereof;
- (h) heavy traffic areas and areas where large number of fishing/sailing vessels are likely to be encountered and areas of strong currents;
- (i) process of calling additional assistance for watch keeping.

(3) The manuals and other information relating to the use of navigation equipment shall be available on the bridge for use of the watch keeping officers.

- (4) (a) in the observance of his duties the officer of the watch shall be responsible at all times for safe navigation of the ship,
- (b) Where necessary the officer of the watch shall call another officer to assist him in his navigational duties. The officer of watch shall be at liberty to call the master at any time.
- (c) where another officer or master is called on the bridge, the officer on watch shall continue to be responsible for the safe navigation until master or such other officer informs him specifically that he has assumed responsibility of the watch.

- 5. (a) every watchkeeping officer shall strictly comply with the collision regulations.
- (b) where due to non-observance of such rules by one of the ships, a close quarter situation develops, whether resulting in a collision or not, details of such events and the identity of both ships shall be reported to the Principal Officer who shall investigate every such report and submit his findings to the Director General.

(6) Every officer on watch shall keep a good lookout which shall include—

- (a) an alert visual and aural lookout to ensure a full grasp of the current situation including the presence of ships, landmarks in the vicinity and position of the ship at any time;
- (b) close observation of the movements and compass bearing of approaching vessels;
- (c) identification of ship and shore lights;
- (d) the need to ensure that the course is steered accurately with or without into pilot and that wheel orders are correctly executed when on manual steering;
- (e) observation of the radar and echo sounder display and
- (f) observation of changes in weather, visibility and the state of sea.

(7) Changing over the Watch—

(a) The relieving Officer of the Watch shall ensure that members of his watch are fully capable of performing their duties and in particular that they are adjusted to night vision. He shall not take over the watch until his vision is fully adjusted to the light conditions and he has personally satisfied himself regarding—

- standing orders and other special instructions relating to the navigation of the vessel;
- the position, course, speed and draught of the vessel;
- prevailing and predicted tides, currents, weather, visibility and the effect of these factors upon course and speed;
- the navigational situation including :—
 - the operational condition of all navigational and safety equipment;
 - errors of gyro and magnetic compasses;
 - the movement of vessels in the vicinity;
 - conditions and hazards likely to be encountered during the watch;
 - the possible effects of heel, trim, water density and squat on underkeel clearance.

(b) When at the time the Officer of the watch is to be relieved, a manoeuvre or other action to avoid any hazard is taking place, the relief of the watch shall be deferred until such action is completed.

(c) The Officer of the watch shall not hand over the watch to the relieving officer if he has any reason to believe that the latter is under any disability which would preclude him from carrying out his duties effectively. In every such case, the Master shall be informed before handing over the watch.

(8) The Officer of the watch shall make regular checks to ensure that—

- the helmsman or the automatic pilot is steering the correct course;
- the standard compass error is checked at least once a watch and, when possible, after any major alteration of course;
- the standard and gyro compasses are compared frequently and repeaters synchronised;
- the automatic pilot is steering effectively; and
- the navigation and signal lights and other navigational equipment are functioning properly.

(9) Navigation in Coastal Waters.—The Officer of the Watch shall identify positively all relevant navigation marks. Position of the ship shall be determined at intervals whose frequency shall, at the discretion of the Master, depend upon factors such as distance from nearest hazard, accuracy of position fixing systems, speed of ship and set experienced. In cases such as a planned approach to an anchorage, or harbours entrance, position shall be plotted continuously. Whenever circumstances allow and particularly when in doubt positions shall be checked using alternate position fixing system.

(10) Restricted visibility.—When restricted visibility is encountered or suspected, the officer of the watch shall comply with the collision regulation making proper use of engines, lookout, radar and helm.

(11) Pilotage Waters.—The presence of a pilot shall not relieve the Master or the Officer of the watch from their duties and obligations towards safe navigation. The master and the watch keeping officer shall familiarize themselves with the navigational plan of the pilot for the intended passage including docking and berthing procedure. They shall co-operate closely with the pilot and maintain an

accurate check on the vessel's position and movements. Alterations of course and/or changes in speed and/or engine orders shall be transmitted through the Officer of the Watch. If the Master or the Officer on which is in any doubt as to the pilot's actions or intentions, he shall seek clarification from the pilot and if still in doubt take corrective action where necessary.

20. Navigational Records.—Master of every ship shall in order to provide an efficient record of the navigation passage maintain at least the following records.

- Chronometer error.
- Weather reports.
- Deviation of magnetic compass.
- Night orders.
- Correction to Nautical Publication.
- Maintenance and breakdowns of navigational equipment.
- Daily navigational log (Mates log).

21. Automatic Pilot.—(1) Automatic pilots, where fitted, shall comply with the requirements of the relevant IMO standard.

(2) Master of every vessel fitted with automatic pilot shall cause the manual steering to be tested after prolonged use of automatic pilot and in any case at least two hours before the vessel is expected to manoeuvre on manual steering.

(3) Alteration of courses with the help of an automatic pilot when other ships are in sight of one another shall be avoided. Alteration of courses in compliance with collision regulations shall be effected by manual steering only.

(4) In areas of high traffic density or in conditions of restricted visibility or in all other hazardous navigational situations, if an automatic pilot is in use, it is required to establish manual control of the ship's steering instantaneously, if the occasion arises in any case qualified helmsman shall at all times be available to take over control of manual steering.

22. Operation of steering gear :

In areas where navigation demands special caution and whenever the ship is being manoeuvred in pilotage or restricted waters or in areas of high traffic density or in a routeing system, more than one steering gear power unit shall be in operation when such units are capable of simultaneous operation.

23. Steering gear tests and drills :

(1) Within 12 hours before departure, the ship's steering gear shall be checked and tested.

The test procedure shall include, where applicable, the operation of the following :—

- the main steering gear;
- the auxiliary gear;
- the steering gear control in the systems;
- steering capability from the navigation bridge as well as from the remote steering location in the vicinity of the steering gear.
- the emergency power supply where available;
- the rudder angle indicators in relation to the actual position of the rudder;
- communications between the bridge and the remote steering location;
- the steering gear power unit failure alarms; and
- automatic isolating arrangements and other automatic equipment.

(2) (a) Simple operating instructions with a block diagram showing the change over procedures for remote steering gear control systems and steering gear power units shall be permanently displayed on the navigating bridge and in the steering gear compartment

(b) All ships' officers concerned with the operation or maintenance of steering gear shall be familiar with the operation of the steering systems fitted on the ship and with the procedures for changing over from one system to another.

(c) In addition to the routine checks and tests prescribed in sub-rule (1) and (2) of this rule emergency steering drills shall be conducted at least once every three months in order to practise emergency steering procedures.

(d) These drills shall include direct control from within the steering gear compartment, the communication procedure with the navigating bridge and where applicable the operation of alternative power supplies.

(5) Every ship on regular frequent voyages of less than 24 hours may carry out the detail tests specified in sub-rules (1) and (2) of this rule at least once every week. In any case operational tests shall be carried out before departure.

(6) The date upon which the checks and tests prescribed in sub-rules (1) and (2) of this rules are carried out and the date and details of emergency steering drills carried out under sub-rule (4) shall be recorded in the official log book.

PART III

Navigational equipment-General requirements.

24. Initial installation—(i) Every ship while installing any Electronic navigational equipment required by these rules shall,

(a) install such equipment complying with the general requirements for electronic navigational aids specified in the relevant IMO standard in addition to the requirements specified in these rules.

(b) install only such equipment as has been type approved, provided any equipment approved by any other Administration party to the International Convention for Safety of Life at Sea 1974 may also be granted type approval where the details of such equipment and certificates of approval granted by such Administration are submitted to the Director General,

(c) provide a suitable and efficient source of power supply for the operation of the equipment specified in these rules and for the purposes of testing and charging of any batteries. The source of electrical energy shall be available at all times when the ship is at sea and at all reasonable times when the ship is in port. The supply of electrical energy shall not exceed the limits set out below :—

(i) AC-Supply

Voltage variation + 10%
frequency variation + 6%

(ii) DC-Supply

110 to 220V + 10% to -20%
24/32W + 30% to -10%.

(d) carry operating and servicing manuals for each equipment complying with the following

(i) in the case of equipments where the design is such that fault diagnosis and repair on board ship is possible down to component level, the manual should provide full circuit diagrams, component layout, and component parts list,

(ii) in the case of equipment containing complex modules in which fault diagnosis and repair down to component level is not practicable, the manual should contain sufficient information to enable a defective complex module to be diagnosed, identified and replaced. The requirements of sub-clause (i) should be met in respect of other modules and these discrete components which do not form part of modules.

(e) carry tools measuring instruments and spare parts specified in the Second Schedule.

(f) provide adequate safe access to all navigational equipments specified in these rules so that they can be maintained or adjusted in situ. Such access shall also be provided for maintenance and adjustment of Radar and Direction Finder Antennae.

(2) Were a ship has changed its registration and has acquired Indian registry for the first time, navigation equipment in use on board such ships shall be considered to have complied with these rules provided :

(a) such equipment has been accepted by the administration under which the ship was registered previously and

(b) such equipment complies with the relevant IMO standard.

25. Siting of navigational equipment—(1) No unit which has not been type approved for mounting in an exposed position or in a position which normally permits the entry of moisture or water shall not be installed in exposed position.

(2) The accuracy of ships magnetic compasses shall be safeguarded while installing any navigation or communication equipment.

(3) Safe distances at which an approved equipment be placed from a standard and magnetic compass, in order not to affect the accuracy of such compass shall be clearly marked on such equipment or be stated on the certificate of approval. While installing such equipment safe distance shall be strictly maintained : Provided that when it is impracticable to maintain the safe distances, the Director General may allow such reduced distances where the actual effects on the compass is shown to be stable and such that it can be corrected by compass adjustment.

(4) Safe distances specified for the equipment do not take into account the structures required to be added for installation of such equipment. Where such structures are necessary safe distances shall be determined and the equipment installed at such distance.

(5) Storage of spare parts for equipment shall also comply with the safe distance requirement specified for the equipment for which the spares are stored.

(6) (a) Where radio interference from any such equipment is likely to affect the radio communications, such equipment should be widely separated from the radio communication system.

(b) electrical interference or mechanical noise produced by navigational installation shall not affect efficient operation of other equipment.

(c) noise from navigation installation shall not disturb the members of the crew either on or off duty.

(d) navigation equipment shall not be installed in position where excessive heat and/or fumes may cause failure or undue maintenance difficulties.

(e) navigational equipment including antenna where practicable be mounted so as to prevent the performance and reliability of the installation being adversely affected by vibration,

(f) every equipment shall be designed to provide safeguards which either prevent access to high voltages by means of isolating switches, door switches or similar devices or ensure that access is possible only by means of a tool such as key spanner or screw driver.

(g) where RF or X-radiation is likely to present a hazard to personnel, warning notices shall be displayed on the equipment showing safe distances. Similar warning shall be shown in the handbook for such equipment.

(h) approved safe distance plan showing location of equipment and its distance from magnetic compasses and other equipments shall be carried on board.

26. Maintenance of Navigational equipment—(1) Every reasonable step shall be taken to maintain navigational equipment prescribed in these rules in efficient working order. Malfunctioning of an equipment shall not make the ship unseaworthy or a reason for delaying the ship in port where—

(i) an installation similar to that specified in the regulation is provided additionally and is in good working order; or

- (ii) there is no appropriate repair agency in the port ;
or
- (iii) spare parts are not readily available in that port.

(2) Where navigational equipment is malfunctioning :

- (i) a ship on International voyage may be permitted to sail to the next port where such repairs or availability of spare parts is feasible,
- (ii) a ship on coasting voyage of India may be permitted to sail without such equipment for a period of one month. The Principal Officer may, on consideration of the circumstances extend this period to a maximum of three months.

(3) The performance of the radar installation shall be checked before the ship proceeds to sea and at least once every watch whilst the ship is at sea.

(4) Every foreign going ship of 1600 tons or over required to be fitted with a radar installation, shall be provided with at least one officer or member of crew adequately qualified to carry out radar maintenance Provided that :

- (a) if on an occasion on which a ship goes to sea, such officer or member of the crew is not carried because of illness incapacity or other unforeseen circumstances, the provisions of this rule shall not apply for a period of one week or the duration of the voyage to the next port of call whichever is later. One such period shall not immediately be followed by another period at sea.
- (b) on every such occasion the master or the owner shall notify the Principal Officer of his inability to carry a suitably qualified person for this purpose and make an entry in the official log book to that effect.

(5) While a ship which is required to be fitted with a radar installation is at sea and a radar watch is being kept, the radar installation shall be under the control of Master or a certified Watch Keeping Officer.

(6) For the purposes of these rules, an officer or crew member shall be deemed qualified to carry out radar maintenance if he holds :

- (a) a Radar Maintenance Certificate.
- (b) a certificate recognised by Director General as being equivalent to the certificates mentioned in clause (a) or
- (c) a certificate of proficiency to carry out maintenance on specified types of radar installations granted at the conclusion of a radar manufacturer's course.

PART IV

NAVIGATIONAL EQUIPMENT CARRIAGE REQUIREMENT

27. Ships of 150 tons gross tonnage and above.—(1) This rule applies to ships of 150 tons gross tonnage and above.

(2) Every such ship shall carry :

- (a) a standard magnetic compass fitted on the centre line of the ship and mounted on a binnacle ;
- (b) steering magnetic compass fitted on the centre line of the ship and mounted on a binnacle or an arrangement by which heading information provided by the standard compass required under (a) is made available and is clearly readable by the helmsman at the main steering position.
- (c) where a standard and steering compass is fitted, adequate means of communication between the standard compass position and the normal navigation control position.
- (d) means for taking bearings as nearly as practicable over an arc of the horizon of 360° provided ships of less than 300 tons gross tonnage lying on the

coasting trade of India may be granted relaxation from the above requirement where it is considered that total compliance shall be impracticable.

(3) Every magnetic compass referred to in sub-rule 2 shall be properly adjusted and its table or curve of residual deviation shall be available at all times on the bridge.

(4) Such table or curve of residual deviation shall be checked for accuracy once at least every twelve months or through record of compass deviations maintained as per requirements of rule 20. Where a ship has undergone substantial structural changes or alteration which are likely to affect such table or curves or where large residual deviations are observed, the magnetic compass shall be readjusted and a new table or curve of residual deviation shall be made available.

(5) Every such ship shall also carry a spare magnetic compass inter-changeable with the standard compass; provided where the ship is fitted with a steering magnetic compass and a gyro compass this requirement need not be complied with.

(6) Information with respect to the ship's heading shall be made available by suitable means at the emergency steering position, where provided.

(7) Every ship, shall carry a sextant and a chronometer.

(8) Every such ship shall carry an aneroid barometer or a mercury barometer calibrated by an appropriate officer of the Indian Meteorological Department.

28. Ships of less than 150 tons gross tonnage.—(1) This rule applies to ships of less than 150 tons gross tonnage.

(2) Every such ship shall comply with the provisions of rule 27 as far as practicable. Every such ship shall, in any case, be provided with a steering compass and efficient means for :

- (a) taking bearings
- (b) measuring depth of water, and
- (c) measuring distance steamed.

29. Ships of 500 gross tonnage and above.—(1) This rule applies to ships of 500 tons gross tonnage and above.

(2) Every such ship shall comply with the provisions of rule 27 and in addition shall carry :

- (a) master gyro compass or a gyro repeater clearly readable by the helmsman at the main steering position ;
- (b) radar installation along with facilities for plotting radar bearings which, as far as possible, shall be as effective as a reflection plotter ;
- (c) device for indicating speed and distance ;
- (d) indicator showing the rudder angle, the rate of revolution of each propeller and in addition, if fitted with variable pitch propeller or lateral thrust propeller, the operational mode of each such propeller. All such indicators shall be readable from the conning position and
- (e) an echo sounding device.

30. Ships of 1600 gross tonnage and above.—(1) This rule applies to ships of more than 1600 tons gross tonnage engaged on International voyages or on voyages which extend more than 500 miles.

(2) Every ship shall comply with the provisions of rule 29 and in addition shall carry,

- (a) a gyro repeater or repeaters suitably placed for taking bearings, as nearly as practicable, over an arc of the horizon of 360° .
- (b) radio direction finding apparatus.

31. Ships of 10,000 tons gross tonnage and above.—(1) This rule applies to vessels of 10,000 tons gross tonnage and upward.

(2) Every ship shall carry the equipment specified in rule 30 and in addition shall comply with this rule.

(3) Every such ship shall carry,

- two radar installations, each capable of being operated independently of the other,
- at least one of the radar installations specified in clause (a) of this sub-rule shall be equipped to operate on 9 Ghz frequency to detect survival craft radar transponder beacons,
- an automatic radar plotting aid,
- a device to indicate speed and distance through the water.

(4) Ships of 1,00,000 tons gross tonnage and upwards constructed on or after 1st September 1984, shall, in addition, be fitted with a rate of turn indicator.

32. Provision of Pilot Ladder.—(1) Every ship shall be provided with a pilot ladder or other safe and convenient means which shall comply with the requirement of the relevant IMO standard.

33. Maintenance and use of a pilot Ladder and other appliances.—(1) The pilot ladder and other appliances required to be carried on board under rule 32 shall be kept in good condition and shall be reserved for the embarkation and disembarkation of pilots and officials or other persons while a ship is arriving or leaving a port.

(2) Pilot ladder and other appliances such as mechanical hoists shall be used whenever a pilot or Harbour Master embarks or disembarks from a ship. No other ladder other than pilot ladder shall be used for such purposes.

PART V Miscellaneous Requirements

34. Emergency towing arrangements for tankers.—(1) Every tanker, chemical carrier and Gas carrier or vessels carrying hazardous and noxious substances of 50,000 tons deadweight or more shall be provided with an emergency towing arrangements in compliance with the relevant International Maritime Organisation standard.

(2) Every tanker or chemical carrier and gas carrier of more than 1,00,000 tons deadweight or more shall also be provided with such towing arrangements at the stern.

(3) Every such towing arrangements shall at all times be pre-rigged and so stored that it can be brought into use with the least power requirements.

35. Equivalents and Exemptions.—(1) The Central Government may, if it considers unreasonable or unnecessary to require a standard magnetic compass, exempt classes of ships from these requirements if the nature of the voyage, the ship's proximity to land or the type of ships does not warrant a standard compass. In any case, however, every such ship shall be provided with a steering compass.

(2) The Central Government may exempt a ship of less than 500 gross tonnage from the requirements of the radio direction finder equipment. Every such grant of exemption shall take into account that the radio direction finder equipment is necessary both as navigation equipment and as an aid to locating ships, aircrafts and survival craft.

(3) Any of the equipment specified in these rules and installed on board ships on or after 1st September, 1984 shall, conform to the relevant IMO standard. Equipment fitted prior to 1st September 1984, shall be exempted from full compliance with the IMO standard provided the equipments generally meet the requirements of the functional criteria.

(4) If the application of the requirements of these rules necessitates structural alterations to a ship constructed before 1st September 1984, an extension of the time limit for fitting the required equipment shall be granted taking into account the 1st scheduled dry-docking of such a ship.

(5) Except as provided elsewhere in these rules, the Central Government may grant to individual ships exemptions of a

partial or conditional nature when any such ship is engaged on a voyage where a maximum distance from the ship to a shore, the length and nature of the voyage, the absence of general navigation hazards, and other conditions affecting safety are such as to render the full application of these rules unreasonable or unnecessary. Grant of every such exemption shall take into account the effect such exemptions may have upon the safety of all other ships.

The First Schedule

(See rule 14)

Safety Manning Certificate

Issued under the provision of the International convention for the safety of life at Sea, 1974.

Name of Ship	Port of Registry	Distinctive Letters	Gross Tonnage
.....

I, the undersigned certify.....

(1) that the above mentioned ship, having regard to the principles and guidelines as set out in IMO Resolution A 481 (XII) and Section 76 of Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), is considered to be safety manned if, whenever she proceeds to sea, it carries not less than the number and grade of personnel shown in the table set out below :

Table

(a) Deck Department		(b) Engine Department	
Rank	Grade	Rank	Grade
Master		Chief Engineer	
Chief Officer		Second Engineer	
Second Officer		Third Engineer	
Third Officer		Fourth Engineer	
Radio Officer		Rating Watchkeeping	
Ratings		Watchkeeping Officer	

(c) Certificated persons for survival craft.

(d) Persons with Dangerous Cargo Endorsement :

Officers.....

Ratings.....

2. This Certificate is limited to service as follows :

.....

.....

3. This Certificate is valid until
subject to the conditions specified in any temporary dispensation that may be issued by the authority.
issued at Bombay/Madras/Calcutta.

Date :

Principal Officer

Mercantile Marine Dept:.....

Second Schedule

See Rule-24(1)(c)

Tools, measuring instruments, spare parts, etc.

1. Tools and miscellaneous items to be carried by all ships

- 1 medium size half round file
- 1 pair large insulated pliers
- 1 pair large long nose pliers
- 1 pair miniature long nose pliers
- 1 pair miniature side cutting pliers
- 1 long screwdriver, insulated, with or 6 mm blade
- 1 medium length screwdriver, non-magnetic, with 6 mm blade
- 1 grub screwdriver, insulated with 3 mm blade
- 1 screwdriver, watchmakers with 1.5 mm blade
- 1 screwdriver, small, cross-headed
- 1 screwdriver, medium, cross-headed
- 1 set of BA spanners (flat and box) (size 0, 2, 4, 6 and SBA)
- 1 set of isometric spanners (flat and box) (sizes M2 to M6)
- 1 spanner, adjustable up to 25 mm gap
- 1 set of Allen keys
- 1.5 mm to 6 mm metric
- 1 Allen key size .050 in AF
- 1 light duty soldering iron for use with PCBs, suitable to the ship's voltage.
- 1 solder extractor
- 1 torch or portable inspection lamp
- 25 grams of petroleum jelly
- 100 grams of resin-cored solder
- 100 grams of insulating tape
- 100 grams of switch lubricant
- 6 metres of flexible insulated wire (5 amp)
- A quantity of the following : grease suitable for machine in use (where appropriate) silicone compound
- oil for scanner gear box (where appropriate) fuse wire, 5 amp and 15 amp

Notes.—(a) The tools listed need not necessarily duplicate any which are required to be carried to conform to the Radio Installation Regulations.

(b) Any special tools necessary as detailed in the equipment manual should also be carried.

2. Measuring instruments

- 1 high grade multimeter, with a minimum sensitivity of 20 kohm/volt, capable of reading ac and dc current upto 10 amps, voltages upto 1 KV and resistance from 1 ohm to 10M ohms to be carried on all ships.

IEHT multiplier suitable for use with the multimeter, or other means of measuring EHT voltages upto 20 KV to be carried on ships operating outside the area specified in the footnote below.

1 dual trace or double beam oscilloscope having a bandwidth of at least 5 Mhz to be carried on ships operating outside the area specified in the footnote below.

3. Spare parts and spare equipment for radar installations (as appropriate for the radar installed).

This list contains those spare parts which are in widespread use. It should be noted that radar may contain other items which could, with advantage, be carried out which are not sufficiently widespread in use to justify inclusion in this list. The carriage of such additional items would be on a voluntary basis.

1 valve for each in use, upto 1 maximum of 5 of each type
1 set of brushes for each machine included in the radar installation

1 Magnetron for each type in use

1 Klystron for each type in use

1 TR cell (for 3 cm radars only)

1 drive belt of each type fitted

1 heading marker antenna switch assembly for each type in use.

1 set of generator bearings (if only one generator is fitted)

1 set of time base output transistors for each type in use

1 set of video output transistors for each type in use

1 set of extension leads and extension PCB for servicing purposes (where appropriate)

4. Spare parts and spare equipment for gyro compass installations (as appropriate for the equipment in use)

The following items should be carried on ships required by the regulations to have a gyro compass installation :

2 cartridges for each cartridge fuse in use

2 dial lamps for each dial lamp in use

1 glass, azimuth circle, for each type in use

1 glass, pelorus stand cover, for each type in use

5. Spare parts and spare equipment for echo sounder installations (as appropriate for the equipment in use). The following items should be carried on ships required by the Regulations to have an echo sounder installation :

2 cartridges for each cartridge fuse in use

1 lamp for each indicator lamp in use

1 stylus

2 rolls of recording paper.

6. Spare parts and spare equipment for direction-finder installations (as appropriate for the equipment in use)

The following items should be carried on ships required by the Regulations to have a direction-finder installation :

2 cartridges for each cartridge fuse in use

1 lamp for each indicator lamp in use.

[F. No. SR-11013/1/92-MA]

S. K. DARGAN, Under Secy.

